सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 18/-
वार्षिक	₹ 200/-
विशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेशों में (वार्षिक) 30 यु.एस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

दिसम्बर, 2015 वर्ष 14 अंक 10

पढ़ते हैं हम दुरूद

हर रोज़ हर नमाज़ में पढ़ते हैं हम दुरूद
हर सुब्ह और शाम में पढ़ते हैं हम दुरूद
एहसान याद करते हैं प्यारे नबी के हम
इम्कान में बदल नहीं, पढ़ते हैं हम दुरूद
जब भूलते हैं बात तो करते हैं याद खूब
आती नहीं है याद तो पढ़ते हैं हम दुरूद
लेते नबी का नाम या सुनते नबी का नाम
फौरन नबीये पाक पर पढ़ते हैं हम दुरूद
रहमत नबी पे या रब और उनपे हों सलाम
हुब्बे नबी में या रब पढ़ते हैं हम दुरूद

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

क़ुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	03
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	04
ईमान वालों पर अल्लाह तआ़ला	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	05
जगनायक	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	09
आदर्श न्याय (ग्रहीत)	जमाल अहमद नदवी	13
मुसलमानों के दो फ़राइज़	हज़रत मौलाना अली मियां नदवी रह0	15
अल्लाह तआ़ला अपने प्रिय नबी	इदारा	16
पहले अपने घर की इस्लाह	मौलाना सै0 मु0 हमजा हसनी नदवी	21
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	22
सुलतान नासिरुद्दीन	ग्रहीत	28
नजरान के ईसाई	इं0 जावेद इक़बाल	29
उर्दू के आधार स्तम्भ	डॉ0 मुहम्मद अहमद	32
हमारे स्मार्ट स्टूडेण्ट	डॉ0 हैदर अली	35
लाखों सलाम	हज़रत मौ0 शाह नफीसुल हुसैनी रह0	36
उर्दू के कुछ विशेष	इदारा	38
उर्दू सीखिए	इदारा	40

क़ुआनि की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर-ए-बकरः

अनुवाद- रसूल ने मान लिया जो कुछ उस पर उसके रब की ओर से उतरा, और मुसलमानों ने भी, सबने अल्लाह को और उसके फरिश्तों को और उसकी किताबों को और उसके रसूलों को माना, कहते हैं कि हम किसी पैगम्बर को उसके पैगम्बरों में से अलग नहीं करते, और कह उठे कि हमने सुना और कबूल किया, ऐ हमारे रब हम तेरी बख्शिश चाहते हैं और तेरी ही ओर लौट कर जाना है[(1)(285)]। अल्लाह किसी जान पर उसकी सहन शक्ति से बढ़ कर ज़िम्मेदारी का बोझ नहीं डालता। हर आदमी ने जो कमाई की है, उसका फल उसी के लिए है और जो बुराई समेटी है, उसका वबाल उसी पर है। (ईमान लाने वालो, तुम इस तरह दुआ किया करो) ऐ हमारे रब हमसे भूल चूक में जो खताएं हो जायें, उन पर पकड़ न कर। मालिक, हम पर वह बोझ न डाल, जो तूने हमसे पहले लोगों पर डाले थे। ऐ हमारे रब जिस बोझ को उठाने की ताक़त हममें नहीं है, वह हम पर न रख। हमारे साथ दरगुजर कर, हम को बख्श दे, हम पर दया कर, तू ही हमारा रब है इन्कार करने वालों के मुकाबले में हमारी मदद कर[(2)(286)]।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. पिछली आयत से जब यह मालूम हुआ कि दिल के ख्यालात पर भी हिसाब और पकड़ है तो इस पर हजराते सहाबा घबराये और डरे और उनको इतना सदमा हुआ कि किसी आयत पर न हुआ था सहाबा ने आप सल्ल0 से शिकायत की तो आपने फरमाया कि अल्लाह तआला की ओर से जो हुक्म आये चाहे आसान हो या मुश्किल, मोमिन का काम यह नही कि उसके मानने में थोड़ा भी संकोच करे, तुम को चाहिए कि अल्लाह तआला के तमाम अहकाम सुनकर यह कहो "ऐ हमारे परवरदिगार हमने आप का हुक्म सुना और उसकी इताअत की, ऐ हमारे परवरदिगार अगर हुक्म की तामील में हमसे कोई कोताही हुई हो तो उसको माफ फरमा दे क्योंकि हम सबको आप की ही ओर लौटना है, सहाब—ए—किराम रज़ि0 ने आप सल्ल0 के हुक्म के मुताबिक ऐसा ही किया अगरचे उनके ज़ेहन में यह ख्याल खटक रहा था कि बे इख्तियार दिल में आने वाले ख्यालात और वसाविस से बचना तो सख्त दुशवार है, उस पर अल्लाह तआ़ला ने यह सूर—ए—बकरा की आखिरी दो आयतें नाज़िल फरमाईं, जिनमें से पहली आयत में मुसलमानों की तारीफ, और दूसरी में उस आयत की अस्ली तफ़्सीर बतलाई गई है जिसमें सहाब—ए—किराम को संकोच पैदा हुआ था पहली आयत में आप सल्ल0 के ईमान का

जिक्र किया गया, उस के बाद मोमिनीन के ईमान का अलग जिक्र किया गया इसमें इशारा है कि अगरचे नफ़्से ईमान में आप सल्ल0 और मुसलमान शरीक हैं, लेकिन दर्जाते ईमान के एतिबार से उन दोनों में बड़ा फर्क़ है, आप सल्ल0 का इल्म मुशाहदे और सिमाअ़ की बिना पर है और दूसरे मुसलमानों का इल्म ईमान बिल गैब की बिना पर, उसके बाद ईमाने मुजमल की तफसील बतलाई, उसके बाद यह बात फरमाई कि इस उम्मत के मोमिनीन पिछली उम्मतों की तरह ऐसा न करेंगे कि अल्लाह के रसूलों में आपसी भेद भाव करें कि किसी को नबी मानें और किसी को नबी न मानें जैसे यहूद ने हजरत मूसा अलैहिस्सलाम को और नसारा ने हजरत ईसा अलै0 को नबी माना मगर आखरी नबी मुहम्मद रसूलुल्लाह को नबी न माना, अल्लाह ने इस उम्मत की तारीफ इसी लिए फरमाई कि यह अल्लाह के किसी रसूल का इंकार नहीं करते, और फिर सहाब–ए–किराम की तारीफ उनके उस वाक्य पर जो उन्होंने आप सल्ल0 की बात मान कर कहा था कि हमने सुना और हमने इताअ़त की, उसके बाद दूसरी आयत में एक खास अंदाज से वह शुब्हा दूर किया गया जो पिछली आयत के जुम्लों से पैदा हो सकता था कि दिल में छुपे हुए ख्यालात पर हिसाब हुआ तो अजाब से कैसे बचेंगे इरशाद फरमाया अल्लाह तआला किसी आदमी को उसकी ताकत से ज़ियादा काम का हुक्म नहीं देते, इसलिए गैर इख्तियारी यानी बिला इरादा किये जो ख्यालात व वसवसे दिल में आ जायें, और फिर उन पर कोई अमल न हो तो वह सब अल्लाह के नजदीक माफ हैं, हिसाब और दण्ड केवल उन कामों पर होगा जो इख्तियार व इरादे से किये जायें बिल्कुल अखीर में कुर्आन करीम ने मुसलमानों को एक खास दुआ की दीक्षा फरमाई जिसमें भूल चूक और बिला वास्ता गलती से किसी गलत काम के हो जाने की माफी मांगी गयी है, कि ऐ हमारे परवरदिगार भूल चूक और गलती पर हमारी पकड़ न फरमा फिर फरमाया ऐ हमारे परवरदिगार हम पर भारी और सख्त आमाल का बोझ न डालिए जैसा हम से पहले लोगों (बनी इस्राईल) पर डाला गया है, और हम पर ऐसे फराइज न डालिए जिनकी हम ताकत नहीं रखते, इससे मुराद वह सख्त आमाल हैं जो बनी इस्राईल पर लागू थे कि कपड़ा पानी से पाक न हो, बल्कि काटना या जलाना पड़े और कत्ल के बगैर तौबा कुबूल न हो, या मुराद यह है कि दुन्या में हम पर अजाब न किया जाये, जैसा कि बनी इस्राईल के बुरे आमाल पर किया गया, और यह सब दुआयें अल्लाह तआ़ला ने क़बूल फरमाने का इज़हार भी रसूलुल्लाह सल्ल0 के द्वारा कर दिया।

अल्लाह तआला हम सबको अपनी गलतियों पर माफी मांगने की तौफीक़ अता फरमाये। आमीन

❖❖❖

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

प्यारे नबी की प्यारी बातें

इल्म की फजीलत

—अमतुल्लाह तस्नीम

इल्म की तलब में निकलना खुदा की राह में निकलने के बराबर है:-

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जो आदमी इल्मे दीन हासिल करने के उद्देश्य से घर से निकले तो जब तक वह घर वापस न होगा उसका यह ज़माना अल्लाह तआला के रास्ते में गिना जायेगा। (तिर्मिजी)

मुअल्लिम (टीचर) के लिए दुआयें:-

हज़रत अबू उमामा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया आलिम की फज़ीलत आबिद पर ऐसी है जैसे मेरी फजीलत तुम में से कम दर्जे वाले पर, फिर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला, उसके फरिश्ते, और आसमानों ज़मीन वाले, यहां तक कि चीटियां अपने बिलों में, मछलियां पानी में, भलाई की तालीम देने वालों (यानी इल्मे दीन सिखाने वालों) के लिए दुआयें करती हैं। (तिर्मिजी)

तालिबे इल्म का सम्मान:-

हज़रत अबू दर्दा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिसने इल्म की खोज में सफर किया उस पर अल्लाह तआला जन्नत का रास्ता आसान फरमायेगा और फरिश्ते इल्मे दीन के हासिल करने वाले से खुश हो कर अपने पर बिछा देते हैं और जो आसमानों जमीन में है यहां तक कि मछलियां पानी में आलिम के लिए दुआयें करती हैं और आलिम की फजीलत आबिद पर ऐसी है जैसे चांद को तमाम सितारों पर, और उलमा नबियों के वारिस होते हैं और अंबिया किसी को दीनार दिरहम का वारिस नहीं बनाते बल्कि इल्म का वारिस बनाते हैं, तो जिस ने इल्म हासिल किया उसने अपनी खुश क़िस्मती से पूरा हिस्सा हासिल कर लिया। (अबू दाऊद— तिर्मिजी)

मुबल्लिग (प्रचारक) के लिए आप सल्ल0 की दुआ:-

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अल्लाह तआला उस आदमी को आबाद करे जो मेरी बात को हू बहू पहुंचा दे, शायद सुनने वाला जियादा याद रखने वाला हो। (तिर्मिजी)

दीन की बात न बताने वाले की सज़ा:-

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिससे दीन की किसी बात के बारे में प्रश्न किया गया और उसने (मालूम होने के बावजूद) नहीं बताया तो कियामत के दिन उसको आग की लगाम दी जायेगी। (अबू दाऊद—तिर्मिजी)

शेष पृष्ठ .....12...पर...

ईमान वालों पर अल्लाह तआला का खुसूसी एहसान (विशेष उपकार)

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी

अल्लाह तआला ने अपने बन्दों को अनगिनत नेमतें (वरदान) दी हैं, उसकी हर नेमत उसका अपना उपकार है, अल्लाह तआला ने अपने बन्दों को क्या क्या और कितनी नेमतें दीं कोई उनको गिन नहीं सकता, खुद अल्लाह तआला ने पवित्र कुर्आन में बता दिया कि *"यदि तुम अल्लाह की नेमतें गिनना चाहो तो गिन नहीं सकते हो।*

(सूरः 16 : 18)

उसने हमको अदभुत शरीर दिया, उसमें मस्तिष्क हृदय, फेफड़े, गुर्दे तथा कलेजा जैसे बहुमूल्य अंग दिये जिनके बिना मनुष्य जीवित ही नहीं रह सकता, हाथ, पैर, मुँह आंख कान, नाक तथा पैरों जैसे अवश्यक अंग प्रदान किये, शरीर का एक एक अंग इतना मूल्यवान है कि उसका बदल नहीं हो सकता यहां तक मलमूत्र के अंग भी विकृत हो जायें तो उनकी चिकित्सा पर मनुष्य अपनी सारी सम्पत्ति लुटा देने को तैयार हो जायेगा, यह तो शरीर के वरदान हुए, शरीर के बाहर देखें तो जल, वायु, धूप, प्रकाश कितने मूल्यवान वरदान हैं, फिर खाने पीने के विभिन्न प्रकार के अनाज, फल, तरकारियाँ, दूध आदि कैसी नेमतें हैं, आने जाने के अनेकों प्रकार के साधन सवारियाँ आदि अल्लाह के वरदान और उसके उपकार हैं।

इन सबके अतिरिक्त बड़ा अनमोल वरदान बुद्धि है फिर उस बुद्धि द्वारा शिक्षा की प्राप्ति है। इन सारी नेमतों से बढ़ कर मनुष्य के लिए अल्लाह की ओर से "ईमान" का वरदान है और यह अल्लाह का अपने बन्दों पर सब से बड़ा उपकार है। ईमान का अर्थ विस्तार चाहता है जिसको हम सच्चा राही के पन्नों पर बार बार लिख चुके हैं, यहां यह बताना है कि ईमान अल्लाह के नबियों द्वारा ही सीखा और प्राप्त किया जा सकता है।

ईमान सिखाने के लिए अल्लाह तआला ने नबियों का सिलसिला चलाया, पहले नबी और मानुजात के मूल पुरुष हज़रत आदम अलैहिस्सलाम हैं फिर उनके बाद नबियों और रसूलों का सिलसिला चलता रहा, हर काल में और हर क्षेत्र में मनुष्यों को ईमान सिखाने के लिए नबी और रसूल भेजे जाते रहे, हजारों हजार आये उनकी पूरी गिनती अल्लाह को मालूम है, कुछ के नाम पवित्र कुर्आन में आये हैं, सबके अन्त में अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भेजा गया, आपके बाद अब कियामत तक कोई और नबी न आयेगा अब नजात (मोक्ष प्राप्ति) के लिए अन्तिम नबी पर ईमान लाना अनिवार्य है, अल्लाह की ओर से अन्तिम नबी का भेजा जाना मानव जाति अपितु समस्त सृष्टि पर सबसे बड़ा

उपकार है।

अल्लाह तआला ने अपने अन्तिम तथा प्रिय नबी को आदेश दिया कि *"आप कह दीजिए कि ऐ लोगो मैं तुम सब कि ओर अल्लाह की तरफ से रसूल बना कर भेजा गया हूं, वह अल्लाह जिसकी बादशाही आसमानों और ज़मीन पर है, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, वही जीवन देता है और वही मौत लाता है अतः उस अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके भेजे हुए उम्मी नबी पर ईमान लाओ जो स्वयं अल्लाह पर और उसके कलाम (वाणी) पर ईमान रखता है। उस नबी पर ईमान ला कर उसका अनुकरण करो ताकि तुम हिदायत पाने वाले सत्य मार्ग पर चलने वाले हो जाओ।*
(सूरतुल आराफ़ : 158)

अल्लाह तआला ने पवित्र कुर्आन में अपने प्रिय नबी को संबोधित करके कहा *"हमने तुम्हें सारे संसार के लिए बस सर्वथा दयालुता बना कर भेजा है, (अर्थात सारे आलमों के लिए रहमत बना कर भेजा है")*
(सूरतुल अंबिया:107)

अल्लाह तआला का सृष्टि पर यह सबसे बड़ा उपकार है आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम केवल मनुष्यों के लिए ही रहमत नहीं अपितु जिन्नों तथा पशु पक्षियों पेड़ पौधों सब के लिए भी दया हैं जिसके विस्तार की यहां गुंजाइश नहीं है अलबत्ता मनुष्य आपकी दया का लाभ उसी समय उठा सकेगा जब वह आप पर ईमान लाये और आपका अनुसरण करे। जो लोग आप पर ईमान नहीं रखते वह स्वयं अपने को आपकी दया से वंचित करते हैं।

अल्लाह तआ़ला इसी लिए ईमान वालों पर अपना विशेष उपकार जताता है इसलिए कि ईमान वालों ने अपने को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दया का भागी बनाया इसी को पवित्र कुर्आन में इस प्रकार बयान किया गया है। अनुवादः

"निस्संदेह अल्लाह ने ईमान वालों पर बड़ा उपकार किया, जबकि स्वयं उन्हीं में से एक ऐसा रसूल उठाया जो उन्हें उसकी आयतें सुनाता है और उन्हें निखारता है, और उन्हें किताब और हिकमत (तत्वदर्शिता) की शिक्षा देता है, अन्यथा इससे पहले वे लोग खुली गुमराही में पड़े हुए थे"।
(सूरः आले इमरानः164)

आपकी बिअ़सत (भेजे जाने) का वर्णन पवित्र कुर्आन में कई जगह आया है, एक जगह आपका उल्लेख इस प्रकार हैः

"निस्संदेह तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक रसूल आ गया है। तुम्हारा मुश्किल में पड़ना उसके लिए असह्य है। वह तुम्हारे लिए ललायित है। वह मोमिनों के प्रति अत्यन्त करुण, दयावान है"।

(सूर–ए–तौबाः 128)

प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जन्म अरब देश के मक्का नगर में हुआ जहां काबा (अल्लाह का घर) है, आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब अपनी कौम के सरदार थे आपके वालिद का नाम अब्दुल्लाह था, आप की माँ का नाम आमिना था, जब आप अपनी माँ के पेट में ही थे तो आपके वालिद का इन्तिकाल हो गया था, जिस साल हाथी वालों की घटना हुई जिसका उल्लेख सुरतुल फील पारा 30 में है उसी साल उस घटना के 50 दिन बाद आप का जन्म हुआ, जन्म तिथि में मतभेद है किसी ने आठ किसी ने नौ

और किसी ने बारह लिखी है, परन्तु दोशंबा (सोमवार) दिन पर सब सहमत हैं, अधिक शुद्ध बात यह है कि 9 रबीउल अव्वल सोमवार (17 अप्रैल 570 ई0) प्रातः को आपका जन्म हुआ, तीन या सात दिन तक माँ का दूध पिया, अबू लहब जो आपके चचा थे और जो बाद में आपके कट्टर विरोधी बने उसकी बांदी सुवैबा ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को दूध पिलाया, इस खुशी में अबू लहब ने अपनी उस बांदी को आजाद कर दिया था, उसके बाद आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को हज़रत ख़ौला ने दूध पिलाया फिर उम्मे ऐमन फिर कबीला सअ़द की एक औरत ने फिर तीन और औरतों ने आपको दूध पिलाया उनमें से हर एक का नाम आ़तिका था, यह सिलसिला थोड़े दिनों तक चला फिर वहां के रवाज के मुताबिक कबीलों से औरतें आईं और मक्के के नवजात बच्चों को दूध पिलाने के लिए ले गईं, हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दाई हलीमा ले गईं और दो वर्ष तक दूध पिलाया फिर कुछ महीने और अपने पास रख कर हज़रत आमिना को वापस कर दिया।

आप 6 वर्ष के हुए तो माँ वफात पा गईं, दादा ने अपनी देख भाल में रखा, आप 10 वर्ष के हुए तो दादा अब्दुल मुत्तलिब भी वफात पा गये, चचा अबू तालिब की देख रेख में जवान हुए, व्यापार का व्यवसाय अपनाया 25 वर्ष की आयु में 40 वर्षीय विधवा हज़रत खदीजा से निकाह किया, हज़रत इब्राहीम रज़ि0 को छोड़ कर आपकी सारी सन्तान हज़रत ख़दीजा ही से हुईं। जब आप 40 वर्ष के हुए तो एक दिन गारे हिरा में जब आप अल्लाह के ध्यान में थे अल्लाह तआला ने हज़रत जिब्रील अलै0 को भेज कर आप पर "वही" भेजने का सिलसिला आरंभ किया और सूरतुल अ़लक़ की आरंभ की पाँच आयतें उतारीं इस प्रकार आपकी नुबूवत का कार्य आरंभ हो गया। सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।

अल्लाह का शुक्र है कि हम सब आपकी उम्मत में हैं, ऐ अल्लाह अपना प्रेम प्रदान कर और अपने प्यारे नबी का प्रेम प्रदान कर और अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुसरण का सामर्थ्य प्रदान कर, आमीन।

❖❖❖

—नमाज़—

रोज़े महशर कि जाँ गुदाज़ बुवद
अव्वलीं पुरसिशे नमाज़ बुवद

क़ियामत के रोज़ जो जान को पिघला देने वाली बात होगी अर्थात जो सबसे कठिन बात होगी वह नमाज़ के बारे में सुवाल होगा। अतः हम को चाहिए कि हम नमाज़ में कोताही न करें। मर्द लोग पाबन्दी से मस्जिद में जमाअ़त से नमाज़ अदा करें, औरतें अपने घरों में पाँचों वक्त की पाबन्दी से नमाज़ पढ़ें। याद रहे नमाज़ इस्लाम का अहम तरीन रुक्न हैं नमाज़ छोड़ने वाला फ़ासिक़ है। ◆◇◆

जगनायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —अनु0 मुहम्मद गुफ़रान नदवी

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा–

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि ने तौहीद (एकेश्वरवाद) ईमान की दावत इस ढंग से दी कि जिसने भी ध्यान से सुना बात उसके दिल में उतर गयी और उसका ईमान मज़बूत हो गया और आपका अख़लाक़ी, इंसानी हमदर्दी और महब्बत भरा अंदाज़ भी ऐसा था कि जिसने भी करीब से देखा और सुना वह केवल प्रभावित ही नहीं हुआ बल्कि दिल व जान से आपका कहना मानने वाला बन गया और आप पर फ़िदा होने के लिए तैयार हो गया। और यह हालत दो चार आदमियों की नहीं हुई बल्कि जिसने भी आपको देखा सुना और समझा उसकी यही कैफ़ियत हो गई। इस प्रकार आपकी दावती ज़िंदगी की 23 वर्ष की अवधि में ईमान वालों की एक ऐसी जमाअत तैयार हो गई जिसका उदाहरण इतिहास में कहीं नहीं मिलता। आपके दुन्या से तशरीफ ले जाने के बाद यही जमाअत आपका पूर्ण प्रतिनिधित्व करने वाली बन गयी और आपके मिशन को उसने पूरी दियानत व अमानत (सत्यनिष्ठा) के साथ और ध्यानपूर्वक जारी रखा। उसी के अनुकूल अवसर मिलने पर वह जमाअत आप सल्ल0 पर ईमान लाने वाली और कहना मानने वाली जमाअत बन गयी। यह सज्जन लोग मक्का के 13 वर्षीय जीवन काल में कम संख्या में थे, और कुरैश के विभिन्न खानदानों में बिखरे हुए थे। इसलिए हर एक को स्वयं उसके रिश्तेदार परेशान करते थे और इस तरह वह कुरैश के कठोर दिल क़ाफ़िरों और इस्लाम का विरोध करने वालों के अत्याचार का निशाना बनते थे लेकिन इसके बावजूद यह ईमान वाले अपने ईमान पर पूरी तरह जमे रहते थे। उनके सामने अल्लाह की प्रसन्नता और हुजूर सल्ल0 की महब्बत और आख़िरत का मसअला था, जिसको उन्होंने दिल व जान से कुबूल किया था, जो भी ईमान लाता चाहे अमीर होता चाहे ग़रीब, ऊँचे खानदान का होता या कमज़ोर पोज़ीशन का उसमें ऐसा ही पक्का ईमान पैदा हो जाता।

यह ईमान ज़ियादातर दो वजह से पैदा होता था, एक वजह अल्लाह तआला का कलामे मूजिज़ (आजिज़ करने वाला बयान) कुर्आन था, जिसको एक बार भी सुन लेने से आदमी का दिल बदल जाता था। दूसरी वजह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अख़लाक व शफ़कत (स्नेह) को क़रीब से देख लेना था। कुरआन मजीद सुन कर ईमान लाने वालों की संख्या बहुत थी और आपके अख़लाक़ व बात–चीत सुन कर प्रभावित होने वालों की भी संख्या बहुत थी। आपसे प्रभावित होने की एक मिसाल समामा बिन उसाल का वाकिया है।

वह कहते हैं कि वह हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास दुश्मनी बल्कि आपको नुकसान पहुंचाने आए लेकिन मिलते ही बदल गये और कहने लगे कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! कसम है खुदा की, कि सारी दुन्या में मुझको आपसे ज़ियादा और किसी से ऐसी नफरत नहीं थी लेकिन अब तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही दुन्या में सबसे बढ़कर प्यारे मालूम होते हैं[1]।

आप पर ईमान लाने वालों का हाल आपकी महब्बत व तरबियत से ऐसा बन गया कि उनके दिलों में ईमान लाते ही इस तरह की महब्बत और जान निछावर करने की कैफ़ियत पैदा हो जाती और फिर आपकी रहनुमाई और शिक्षा व दीक्षा से जीवन के वास्तविक और उच्च तथ्य की जानकारी इस दर्जे पैदा होती कि उनको उच्चतर उद्देश्य के लिए जान निछावर कर देने में ज़रा भी संकोच न होता और अपने गुरू और नायक नबी–ए–गुकर्रम के आज्ञा पालन में बिना संकोच अपनी जान निछावर कर देने के लिए तैयार हो जाते। अपनी मर्ज़ी और इच्छा में चाहे कितने कठोर हों लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मर्ज़ी के सामने परवाह नहीं करते। और आपकी मर्ज़ी के अनुकूल अमल करते। अतः जो भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाया उसने इस बात का सबूत दिया। उसकी एक बड़ी मिसाल हुदैबिया की सन्धि में सहाबा किराम का कुरैश की ज़लिमाना शर्तों का कुबूल कर लेना और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मर्ज़ी के सामने झुक जाना और ग़ज़व–ए–ख़नदक़ में तीन सप्ताह से अधिक भूखे प्यासे रह कर और सख़्त सर्दी की हालत में अपनी जान हथेली पर लिए जमे रहना है और ग़ज़व–ए–उहद में जब दुश्मन ने सामने आ कर सीधा आक्रमण किया तो दसयों जांनिसार सहाबा आपके सामने आ गए और दुश्मनों के वार अपने सीनों पर लिए और सारे ज़ख्म बर्दाश्त किये ताकि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सुरक्षित रहें और सब एक एक करके आप पर कुर्बान हो गए। हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि0 ने अपना हाथ सामने कर दिया और तीरों को रोकना शुरु किया यहां तक कि उनकी सब उंगलियां ज़ख्मों से लहू लुहान हो गयीं और हाथ लुन्ज हो गया। हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह ने ख़ोद की एक कड़ी को अपने दांतों से निकाला उसी के साथ उनका एक दांत भी गिर पड़ा। दूसरी कड़ी निकाली तो दूसरा दाँत भी उसके साथ बाहर आ गया। अबू दुजाना ढाल बन कर आपके सामने खड़े हो गये, तीर उनपर गिरते रहे लेकिन वह उसी तरह आप पर झुके रहे, यहां तक कि उनकी पीठ तीरों से छलनी हो गई[2]।

गज़व–ए–उहद के बाद मुसलमान मदीना पहुंचे तो रास्ते में बनी दीनार की एक महिला के मकान पर उनका गुज़र हुआ, जिसके बाप, भाई

---

1. सही मुस्लिम किताबुल जिहाद।
2. सीरते इब्ने हिशाम 2/417

और शौहर उस में काम आ गए थे। बारी बारी उन तीन हादसों की सदा उनके कानों में पड़ी थी लेकिन वह हर बार सिर्फ यह पूछती थीं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कैसे हैं? लोगों ने कहा खैरियत से हैं। उन्होंने पास आ कर देखा और बेइख़्तियार पुकार उठीं "आपके होते सब मुसीबतें हेच हैं[1]।"

जब कुफ़्फ़ार ज़ैद बिन दसना को क़त्ल करने के लिए हरम से बाहर लाए तो अबू सुफियान ने उनसे कहाः ज़ैद मैं तुमसे कसम दिला कर पूछता हूँ क्या तुम यह पसन्द करोगे कि तुम आराम से अपने घर वालों में हो और तुम्हारी जगह मुहम्मद सल्ल0 हों? ज़ैद ने जवाब दिया कि मुझे तो यह भी गवारा नहीं कि मैं अपने घर में आराम से रहूं और मुहम्मद सल्ल0 को एक कांटा भी चुभे। अबू सुफियान ने इस पर कहा मैंने किसी को किसी से इतनी महब्बत करते नहीं देखा जितनी महब्बत आप सल्ल0 के साथी आपसे करते हैं[2]।

जो व्यक्ति भी कुछ गिनट के लिए हुज़ूर सल्ल0 से मिल जाता वह आप पर सब कुछ कुरबान कर देने के लिए तैयार हो जाता, कुछ उन आदमियों के अलावा जो यहूदियों के साथ रह कर ईमान ज़ाहिर करते थे लेकिन अन्दर से दुश्मन थे लेकिन आप सल्ल0 ने उनके साथ भी महब्बत और रवादारी का सुलूक किया।

अतः आप सल्ल0 के सहाबा कराम की जो जमाअत बनी वह ईमान और महब्बते रसूल और आपके लाए हुए दीन इस्लाम के आज्ञा पालन में पहाड़ की तरह अटल थे। आहिस्ता आहिस्ता इतनी बड़ी संख्या में यह जमाअत तैयार हुए कि मानव इतिहास में ऐसी नेक और पक्के ईमान व दीन की कोई मिसाल नहीं मिलती। यह हक़ीक़त में अल्लाह की तरफ़ से था, जिसने यह फैसला किया कि आप सल्ल0 के बाद किसी नबी के आने की ज़रूरत नहीं और आपकी संगत और रहनुमाई हासिल करने वालों की जमाअत को ऐसी विशेषताओं और आचरण वाला बना दिया कि नबूवत का उचित प्रतिनिधित्व करते हुए इस दीन को और सर्वोच्च मानवीय मूल्यों को आगे बढ़ाऐं। उस जमाअत का हर व्यक्ति अपनी जगह सूरज व चांद था और आप सल्ल0 ने इस की पुष्टि की और फरमाया : मेरे सहाबा सितारों की तरह हैं, उनमें जिसका अनुसरण करोगो हिदायत (सद्मार्ग) पर रहोगे।

आप सल्ल0 से जो जितना ज़ियादा करीब रहा उसको उतनी ज़ियादा प्राथमिकता प्राप्त हुई। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सबसे ज़ियादा क़रीब हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि0 रहे, कि जिनसे आपकी संगति और मित्रता नबूवत से पहले से थी। वह लगभग आपके समायु थे, केवल दो ढ़ाई साल छोटे थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद इस दीने इस्लाम को स्थापित रखने और आगे बढ़ाने की ज़िम्मेदारी सबसे पहले आपको मिली और प्रथम खलीफा हुए। फिर इसी क्रम से आपके बाद तीन दूसरे खलीफ़ा हुए जो आपके सच्चे उत्तराधिकारी हुए और खुलफा—ए—राशदीन कहलाए। उन सबके ज़रिये खिलाफते राशिदा यानी उच्चकोटी की

1. सीरते इब्ने हिशाम 2/99
2. सीरते इब्ने हिशाम 2/174

खिलाफ़त का सिलसिला आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफात के बाद 30 साल तक जारी रहा और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने "वही" के ज़रिये जो आचरण और गुण और ज़िन्दगी के विभिन्न ज़िम्मेदारियों में जो कार्यप्रणाली अपनाई थी और अपने सहाबा को उसकी शिक्षा दी थी उसके अनुसार इस्लामी पद्धति को सहाबा के ज़रिये बिना घटाए बढ़ाए जारी किया जाता रहा। आगामी समय के लिए उच्च उदाहरण बन गया और सत्य धर्म का मार्ग नियुक्त हुआ।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की 23 वर्षीय शिक्षा व दीक्षा के बाद आपके विश्वास पात्र सहाबा के पास 30 साल तक इस ज़िम्मेदारी के रहने से जिसमें हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में अख़तियार की हुई कार्यप्रणाली के अनुसार काम अंजाम पाए और आईन्दा के लिए नमूना बना। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विश्वास पात्र खुलफा के प्रबन्ध व व्यवस्था कि यह 30 वर्षीय मुद्दत ऐसी मुद्दत थी कि उसकी समाप्ति पर प्रबन्ध संभालने का काम नई नस्ल तक क्रमशः स्थानांतरित हुआ जिसमें प्रत्यक्ष रूप से हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की संरक्षता नहीं थी परन्तु हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के काल की समानता थी और यह वास्तव में अल्लाह तआला की ओर से ही प्रबन्ध था और वह यह कि दस साल वही–ए–इलाही के अधीन स्वयं हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़रिये फिर 30 साल आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम द्वारा दीक्षा प्राप्त किए हुए लोगों के तहत गुज़रे और इन 40 साल में इस्लाम धर्म की आदर्श व्यवस्था का नमूना सामने आ जाए और कयामत तक उसी को सामने रख कर अमल की कोशिश की जाए क्योंकि दीन मुकम्मल कर दिया गया था।

❖❖❖

प्यारे नबी की .....

दुन्या के लिए इल्मे दीन हासिल करने की सज़ाः–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिस आदमी ने वह इल्म जिससे अल्लाह की खुशनूदी हासिल की जाती है उसको दुन्या के किसी लाभ के लिए सीखा तो कियामत के दिन वह आदमी जन्नत की खुशबू भी न पायेगा। (अबू दाऊद)

इल्म किस प्रकार उठेगाः–

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अल्लाह तआला इल्म को इस तौर से नहीं उठाता कि लोगों के दिलों से दूर कर दे बल्कि उलमा को उठा लेता है, और उलमा के उठ जाने से इल्म उठ जाता है– यहां तक कि एक समय ऐसा आयेगा कि कोई आलिम न रह जायेगा। लोग जाहिलों को सरदार बनायेंगे उनसे मसअले पूछेंगे, वह बिना इल्म के फतवा देंगे, तो वह खुद भी गुमराह होंगे और दूसरों को भी गुमराह करेंगे। (बुखारी–मुस्लिम)

❖❖❖

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

आदर्श न्याय (ग्रहीत)

—जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

यहूदी के हक में क़ाज़ी शुरैह का फैसला–

हजरत अली बिन अबी तालिब रज़ि0 की ज़िरह खो गई, आपने वह ज़िरह एक यहूदी के पास देखी आपने यहूदी से फरमाया (उन दिनों आप खिलाफत के ओहदे पर फ़ाइज़ थे) ये यहूदीः यह जिरह जो तुम्हारे पास है मेरी है फुलाँ रोज़ मुझसे खो गई थी।

यहूदी कहने लगाः मेरे क़ब्ज़े में मौजूद जिरह के बारे में आप कैसी बात कर रहे हैं, अगर आप मेरी ज़िरह पर अपना दावा करते हैं तो अब यही एक चारा है कि मेरे और आपके मध्य मुसलमानों का काजी फैसला करे।

चुनांचे हज़रत अली रज़ि0 और वह यहूदी दोनों फैसले के लिए काज़ी शुरैह की अदालत में पहुंचे, जब काज़ी की निगाह अमीरुल मोमिनीन पर पड़ी तो अपनी जगह से उठ खड़े हुए, हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि0 ने फरमायाः बैठे रहें, काजी साहब बैठ गये, फिर अमीरुल मोमिनीन ने फरमायाः मेरी जिरह खो गई है मैंने उसे इस यहूदी के पास देखा है–

क़ाज़ी शुरैह ने यहूदी से पूछाः तुम्हें कुछ कहना है?

यहूदी ने कहाः मेरी ज़िरह मेरे क़ब्ज़े में है और मेरी मिल्कियत है–

क़ाज़ी शुरैह ने जिरह देखी और बोलेः ऐ अमीरुल मोमिनीनः आप का दावा बिल्कुल सच है, लेकिन कानून के मुताबिक आपके लिए गवाह पेश करना अनिवार्य है, हजरत अली रज़ि0 ने बतौर गवाह अपने गुलाम "कन्बर" को पेश किया, उसने आपके हक में गवाही दी, फिर आपने अपने बेटों हज़रत हसन रज़ि0 और हज़रत हुसैन रज़ि0 को अदालत में पेश किया, इन दोनों ने भी आपके हक में गवाही दी। क़ाज़ी शुरैह ने कहाः आपके गुलाम की गवाही तो मैं कबूल करता हूं लेकिन एक गवाह और भी चाहिए, और आपके दोनों साहिबज़ादों में से किसी की गवाही कबूल नहीं कर सकता, फिर हज़रत अली रज़ि0 ने कहाः कसम अल्लाह की! मैंने हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ि0 को रसूले अकरम सल्ल0 की यह हदीस बयान करते हुए सुना हैः "हसन और हुसैन रज़ि0 नौजवानाने अह्ले जन्नत के सरदार हैं"।

क़ाज़ी शुरैह ने कहाः अल्लाह की क़सम! यह बिल्कुल हक़ है हज़रत अली रज़ि0 ने फरमायाः फिर आप नौजवानाने अह्ले जन्नत के सरदारों की गवाही क्यों कबूल नहीं करेंगे?

काज़ी साब ने कहाः यह दोनों आपके साहबज़ादे हैं– बाप के हक में बेटे की गवाही मकबूल नहीं, यह कह कर क़ाज़ी शुरैह ने हज़रत अली अमीरुल मोमिनीन के खिलाफ यहूदी के पक्ष में फैसला सुना दिया और ज़िरह यहूदी के सुपुर्द कर दी।

यहूदी ने तअ़ज्जुब से कहाः मुसलमानों का अमीर मुझे अपने क़ाज़ी की अदालत में लाया और क़ाज़ी ने उसके खिलाफ मेरे पक्ष में फैसला सुनाया और अमीरुल मोमिनीन ने उस का फैसला बेगैर आपत्ति के कबूल भी कर लिया।

फिर यहूदी ने अमीरुल मोमिनीन अली बिन अबी तालिब रज़ि0 की ओर निगाह उठाई और कहने लगाः अमीरुल मोमिनीन! आपका दावा बिल्कुल सच है– यह ज़िरह निःसंदेह आपही की है, फुलां दिन यह आपसे गिर गई थी तो मैंने इसे उठा लिया था, इसलिए यह आप ही की मिल्कियत है, आप ले लें फिर यहूदी कलमये शाहादत पठ कर मुसलमान हो गया।

हज़रत अली रज़ि0 ने फरमायाः मेरी यह ज़िरह भी और यह घोड़ा भी तुम्हारा है।

(हिल्यतुल औलिया लिइब्ने जौज़ी, कंज़ुल उम्माल नं017790)

कंघी की मदद से फैसलाः–

जब अमीरुल मोमिनीन उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह0 ने हजरत इयास रह0 को बसरा में मंसबे कज़ा (न्यायाधीश) के पद पर बिठाया तो उन्होंने अपने अन्दर निपुणता व चातुर्य (जो किसी भी केस की गहराई तक पहुंचने में मददगार साबित हो) पैदा की, इसी प्रकार न्याय के लिए जरूरी शिक्षा व अनुसंधान और पद्धति में पूर्ण सामर्थ्य हासिल कर ली।

एक बार दो आदमियों ने अपनी चादरों के बारे में हज़रत इयास के पास वाद दायर किया, एक की चादर लाल थी और दूसरे की हरी, एक ने अपना वाद इस प्रकार बयान कियाः मैं हौज़ के किनारे अपनी चादर रख कर उसमें स्नान कर रहा था, इतने में यह आदमी आया और मेरी चादर के पास अपनी चादर रख दी और वह भी हौज़ में दाखिल हो कर गुस्ल करने लगा–गुस्ल करके यह मुझसे पहले निकला और मेरी चादर पहन कर चलता बना, जब मैं गुस्ल कर के निकला और इसका पीछा करता इसके पास पहुंचा तो उसने कहा कि यह चादर मेरी है।

हज़रत इयास ने पूछाः क्या तेरे पास कोई सुबूत है? बोला नहीं, इयास ने एक कंघी मंगवाई और उन दोनों के बालों में कंघी की एक के बालों से लाल ऊन निकली और दूसरे के बालों से हरी ऊन निकली चुनांचे हज़रत इयास ने लाल चादर उसके हवाले कर दी जिसके बालों से लाल ऊन निकली थी और हरी चादर उसके हवाले की जिसके सर से हरी ऊन निकली थी।

क़ाज़ी की ज़िहानत ने चोर को क़ैद करा दियाः–

एक व्यवसाई का माल चोरी हो गया, लोगों ने संदेह की बुन्याद पर दो लोगों को पकड़ लिया और उन्हें क़ाज़ी के पास ले गये, उन्होंने काज़ी को बताया कि हमें इन दोनों आदमियों पर संदेह है, निःसंदेह हम यकीन से नहीं कह सकते कि इनमें से अस्ल मुजरिम कौन है?

अब अदालत ही फैसला करे कि कौन मुजरिम है–

शेष पृष्ठ .....20...पर

मुसलमानों के दो फ़राइज़

—हज़रत मौलाना अली मियां नदवी रह0

हम मुसलमानों को कुर्आने मजीद में अल्लाह तआला ने जा बजा ये हिदायत फरमाई है कि हम वाकिआत व हालात से फाइदा उठाया करें। और उनसे सही नतीज़ा निकालें। असबाब और असबाब के नताइज में अल्लाह तआला ने एक ख़ास तअ़ल्लुक़ पैदा किया है। जो वाकिआत हमारे गिर्द व पैश गुज़रते हैं। उनसे हमें सबक़ लेना चाहिए। और कुर्आन मजीद में उस की न सिर्फ हिदायत की गई है। बल्कि सबक़ न लेने पर नाराज़गी का इज़हार और उस बे हिसी की मज़म्मत की गई है। सूर—ए—यूसुफ़ के आखिर में आया है: तर्जुमा *"और आसमान व ज़मीन में बहुत सी निशानियां हैं जिन पर यह गुज़रते हैं और उनसे आंखें बन्द करके चले जाते हैं। (यूसुफ: 105)।*

यानी कितनी निशानियां हैं इस ज़मीन व आसमान में कि इसके पास से यह मुंह फेर कर गुज़र जाते हैं। और उनसे फाइदा नहीं उठाते हैं। उनसे कोई सबक़ नहीं लेते इससे भी ज़ियादा सख़्त अलफाज़ में सूर—ए—यूनुस में कहा गया है। तर्जुमा *"जो ईमान नहीं रखते उनके लिए निशानियां और डरावे कुछ काम नहीं आते" (युनुस: 101)।*

पहला फर्ज़: मुसलमानों का पहला फर्ज़ तो ये है कि वह जहां भी और जिस मुल्क में भी हों वहां वह अव्वलन वहां के लोगों को अल्लाह की उस नेमत में शरीक करने की कोशिश करें जो अल्लाह ने उनको अता की है और उनको इसकी फिक्र रहे। मुसलमान जिस मुल्क में भी रहें। वहां हिदायत को आम करें और अल्लाह तआला ने उन पर जो एहसान फरमाया है। उनको जो हिदायत दी है। उनको जो रोशनी अता फरमाई है। उस रोशनी को जियादा से जियादा फैलाएं। सारा कुर्आने शरीफ उससे भरा हुआ है। अल्लाह तआला न मुसलमानों को इस का जिम्मेदार क़रार दिया है।

दूसरा फर्ज़: दूसरा फर्ज़ जो अज़रुएदीन, इन्सानियत और अ़क्ले सलीम हम पर आइद होता है, वह ये है कि हम अपना तआ़रुफ़ कराएं कि हम किस दीन के मानने वाले हैं, किन उसूलों को हम तसलीम करते हैं और हमारी जिन्दगी किन चीजों की पाबन्द है, इसके साथ साथ हम अपने अ़ख़लाक़ से लोगों को मानूस और क़रीब करें, लोगों को इस दीन के मुतालआ़ पर आमादा करें, जिसके हम पाबन्द हैं, इस दीन के बारे में उनमें तजस्सुस पैदा हो कि यह किस तरह के लोग हैं, यह किस दीन को मानते हैं, हम यह देखते हैं कि यह किसी को तकलीफ नहीं पहुंचाते, यह हर एक के खैरख़्वाह हैं, दौलत ही को सब कुछ नहीं समझते, इनके नज़दीक कुछ और हक़ाइक़ हैं, यह किस

शेष पृष्ठ .....21...पर..

अल्लाह तआ़ला अपने प्रिय नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को आदेश देता है

—इदारा

आप कह दीजिए यह इस्लाम सत्य है आपके रब की ओर से, तो अब जो कोई चाहे ईमान लाए और जो चाहे इन्कार कर दे, हमने तो (न मानने वाले) अत्याचारियों के लिए (जहन्नम की) आग तैयार कर रखी है, जिसकी कनातों (दीवारों) ने उन्हें घेर लिया है, यदि वे पानी के लिए फरियाद करेंगे तो फ़रियाद के प्रत्युत्तर में उन्हें ऐसा पानी मिलेगा जो गर्म तेल की तलछट जैसा होगा, वह उनके मुंह भून डालेगा, बहुत ही बुरा है वह पेय और बहुत ही बुरा है वह विश्रामस्थल।

रहे वह लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, तो निश्चय ही किसी ऐसे व्यक्ति का प्रतिदान जिसने अच्छा कर्म किया हो, हम अकारथ नहीं करते।

ऐसे ही लोगों के लिए सदाबहार बाग़ हैं। उनके नीचे नहरें बह रही होंगी। वहां उन्हें सोने के कंगन पहनाए जाएंगे और वह हरे पतले और गाढ़े रेशमी कपड़े पहनेंगे और ऊँचे तख्तों पर तकिया लगाए बैठे होंगे। क्या ही अच्छा बदला है और क्या ही अच्छा विश्रामस्थल! (पवित्र कुर्आन, अल—कहफ: 29,30,31)

अल्लाह तआ़ला ने अपने अन्तिम नबी के द्वारा अपने बन्दों तक इस्लाम की शिक्षाएं भेजी, बन्दों को चाहिए था कि वह अल्लाह के पैगाम को पा कर प्रसन्न होते और अल्लाह का शुक्र अदा करते हुए इस्लाम स्वीकार करते, और बहुत से अल्लाह के नेक बन्दों ने इसे स्वीकार किया, और अल्लाह का शुक्र अदा किया कि वह बड़े दुख तथा विफलता से बच गये, अल्लाह की रिज़ा को पा लिया परन्तु बहुतों ने अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का विरोध किया तो प्यारे नबी को अल्लाह का आदेश हुआ कि आप उन इन्कार करने वालों को बताइये कि मैं अल्लाह का नबी हूं अल्लाह का रसूल हूं यह सत्य बात, यह हक़ बात अर्थात यह इस्लाम जो तुम तक पहुंचा रहा हूं यह अल्लाह की तरफ से तुम्हारे लिए लाया हूं, अब तुम में से जिसका जी चाहे इसको माने ईमान लाए जिसका जी चाहे न माने, मगर यह जान लो कि मानने वाले, ईमान लाने वाले सफल होंगे, अल्लाह उनसे राजी होगा उनके अगले जीवन में जन्नत के बागों में रखेगा जहां उनको हर प्रकार का सुख होगा यहां जन्नत का थोड़ा परिचय दिया गया है, दूसरी जगहों पर कुर्आन में कुछ ज़ियादा परिचय दिया गया है, परन्तु सत्य है कि जन्नत में वह सुख मिलेगा जिसे मनुष्य सोच भी नहीं सकता, लेकिन जो लोग इस्लाम को न मानेगें इन्कार करेंगे उनके लिए जहन्नम का अज़ाब होगा, यहां उसका कुछ परिचय दिया गया है, परन्तु सत्य यह है कि जहन्नम के दुख और

अज़ाब को कोई सोच भी न पाएगा।

इसी प्रकार सूर–ए–बक़रह आयत नं0 256–257 में बताया गया है कि "दीन में कोई ज़ब्र (दबाव) नहीं अलबत्ता सत्य तथा असत्य स्पष्ट कर दिया गया, अब जो असत्य का इन्कार करके तागूत (शैतान) से विमुख हो कर अल्लाह पर ईमान लाएगा उसको सफलता की ऐसी रस्सी मिल जाएगी जो कभी टूटेगी नहीं अल्लाह बड़ा सुन्ने वाला जानने वाला है। ईमान वाले का काम बनाने वाला अल्लाह है जो उसे पथ भ्रष्टता की अंधेरियों से निकाल कर सत्यमार्ग के प्रकाश में लाता है, लेकिन जिन लोगों ने सत्य का इन्कार किया मुन्किर हो गये शैतान उनका मित्र है वह उनको सत्य मार्ग के प्रकाश से भटका कर पथ भ्रष्टता की अंधेरियों में पहुंचता है, ऐसे ही लोग आग वाले हैं, वह उस आग में अर्थात जहन्नम की आग में सदैव रहेंगे।

ऐसी स्पष्टता के पश्चात अपने भले बुरे का फैसला हमको खुद करना चाहिए अगर हम खुद ही आग में कूदना चाहते हैं तो हम खुद अपनी तबाही चाहते हैं, "निःसंदेह अल्लाह किसी पर जरा भी ज़ुल्म (अत्याचार) नहीं करता, लोग स्वयं ही अपने ऊपर अत्याचार करते हैं"।

यहाँ शैतान का संक्षिप्त परिचय आवश्यक लगता है। अल्लाह तआ़ला की दो विशेष सृष्टि हैं जिन्न तथा इन्स अर्थात इन्सान, अल्लाह तआ़ला पवित्र कुर्आन में बताता है कि "मैंने जिन्न तथा इन्स को केवल अपनी इबादत (उपासना) हेतु पैदा किया है (अज़्ज़ारियात 56) जिन्न शब्द के अन्त में "न्न" है जिसे हम कभी एक न से भी "जिन" लिख देते हैं, जिन्न को जिन्नात भी कहते हैं।

जिन्नातों को अल्लाह तआला ने आग की लिपट से पैदा किया है, उनका शरीर हमारी आंखों से ओझल है, उनका खाना हड्डियों का सत बताया गया है, कुछ रिवायतों में कोयला तथा लीद अर्थात उनका सत भी बताया गया है, सत्य क्या है अल्लाह ही जाने, जिन्नों को अल्लाह ने बड़ी शक्ति प्रदान की है उनको यह शक्ति भी दी है कि वह किसी भी जीवधारी का रूप धारण कर सकें परन्तु वह किस नियम से रूप धारण कर सकते हैं हम उससे अवगत नहीं हैं।

इस धरती पर अल्लाह तआला ने इन्सानों से पहले जिन्नों को बसाया था, जिन्नों में इन्सानों की भांति अच्छे भी थे और बुरे भी उनमें एक बिन अ़ज़ाज़ील नाम का था जिसने अल्लाह तआला की बड़ी उपासना की थी यहां तक कि अल्लाह तआला ने उसे धरती से आकाश पर बुला लिया था वह वहां फरिश्तों के साथ रहता था, जब अल्लाह तआला ने इन्सानें के मूल पुरुष आदम अलै0 को मिट्टी से बनाया तो फरिश्तों को आदेश दिया कि जब मैं आदम को प्राण देकर जीवित करूं तो तुम सब उनके सम्मान में उनके समक्ष नतमस्तक हो जाना, अतएव यही हुआ जैसे ही आदम अलै0 में प्राण आए सब फरिश्ते नत मस्तक हो गये उनमें अज़ाज़ील भी था उसको घमण्ड किया और

नतमस्तक न हुआ, अल्लाह तआला उससे नाराज़ हुए उसको वहां से निकाल दिया और उसका नाम इबलीस पड़ा, शैतान पड़ा, जिसका उल्लेख पवित्र कुर्आन में कई जगहों पर है एक जगह में बयान लिखा जाता है "देखिए पवित्र कुर्आन सूरतुल हिज्र पारा 14 अनुवादः

26. हमने मनुष्य को सड़े हुए गारे की खनखनाती हुई मिट्टी से बनाया है।

27. और उससे पहले हम जिन्नों (जान्न) को लू रूपी अग्नि से पैदा कर चुके थे।

28. याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा "मैं सड़े हुए गारे की खनखनाती हुई मिट्टी से एक मनुष्य पैदा करने वाला हूँ।

29. तो जब मैं उसे पूरा बना चुकूं और उसमें अपनी रूह फूंक दूं तो तुम उसके आगे सजदे में गिर जाना"।

30. अतएव सबके सब फरिश्तों ने सजदा किया।

31. सिवाय इब्लीस के। उसने सजदा करने वालों के साथ शामिल होने से इन्कार कर दिया।

32. अल्लाह ने कहा "ऐ इबलीस! तुझे क्या हुआ कि तु सजदा करने वालों में शामिल नहीं हुआ?"

33. उसने कहा "मैं ऐसा नहीं हूं कि मैं उस मनुष्य को सजदा करूं जिसको तूने सड़े हुए गारे की खनखनाती हुई मिट्टी से बनाया।"

34. कहा "अच्छा, तू निकल जा यहां से, क्योंकि तुझपर फिटकार है।

35. निश्चय ही बदले के दिन तक तुझ पर धिक्कार है।"

36. उसने कहा "मेरे रब! फिर तू मुझे उस दिन तक के लिए मुहलत दे, जबकि सब उठाए जाएंगे।"

37. कहा "अच्छा तुझे मुहलत है।

38. उस दिन तक के लिए जिसका समय ज्ञात एवं नियत है।"

39. उसने कहा "मेरे रब! इसलिए कि तूने मुझे सीधे मार्ग पर विचलित कर दिया है, अतः मैं भी धरती में उनके लिए मन मोहकता पैदा करूँगा और उन सब को बहका कर रहूँगा।

40. सिवाय उनके जो तेरे चुने हुए बन्दे होंगे।"

41. कहा "मुझ तक पहुंचने का यही सीधा मार्ग है।

42. मेरे बन्दों पर तो तेरा कुछ ज़ोर न चलेगा, सिवाय उन बहके हुए लोगों के जो तेरे पीछे हो लें।

43. निश्चय ही जहन्नम का ऐसे समस्त लोगों से वादा है।

44. उसके सात द्वार हैं। प्रत्येक द्वारा के लिए उन का एक ख़ास हिस्सा होगा।"

सूरतुल कहफ आयत 50 पारा 15 का अुनवाद भी पढ़ लीजिए–

याद करो जब हमने फरिश्तों से कहा "आदम को सजदा करो।" तो इबलीस के सिवा सबने सजदा किया। वह जिन्नों में से था। तो उसने अपने रब के आदेश का उल्लंघन किया। अब क्या तुम मुझे छोड़ कर उसको और उसकी संतान को अपना संरक्षक (मित्र) बनाते हो हालांकि वे तुम्हारे शत्रु हैं। क्या ही बुरा विकल्प है, जो ज़ालिमों के हाथ आया।

पवित्र कुर्आन के इस बयान से ज्ञात हुआ कि–

(1) जिन्न दो प्रकार के होते हैं–

- इबलीस और उसकी संतान।
- इबलीस और उसकी संतान

के अतिरिक्त जिन्न।

(2) इबलीस को कियामत तक की छूट मिली है वह कियामत तक जीवित रहेगा और अपनी संतान के साथ मिल कर आदम की संतान को बहका कर सत्य मार्ग से विचलित करने का प्रयास करता रहेगा। परन्तु अल्लाह वालों पर उसका वश न चलेगा।

(3) दूसरे जिन्नों में भले भी हैं और बुरे भी जैसा कि सूरतुल जिन्न पारा 29 में आया है।

अगर अल्लाह तआला चाहता तो सारे इन्सानों को एक मत कर देता। सब सत्य मार्ग पर होते। कोई सत्य का विरोध न करता। मतभेद न होता, परन्तु अल्लाह तआला ने मानव जाति को इस परीक्षा क्षेत्र, संसार में भेजा तथा उसको विभिन्न प्रकार के अनगिनत वरदान प्रदान किये उनमें उसकी परीक्षा चाहता है। जैसा कि सूरतुल माइदा की आयत 48 में संकेत है।

और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सबको एक समुदाय बना देता परन्तु उसने जो कुछ तुमको प्रदान किया है उसमें तुम्हारी परीक्षा चाहता है पस तुम भलाई की ओर लपको। तुम सबको अल्लाह की ओर लौटना है वहां तुम सबको जिन बातों में मतभेद करते हो अर्थात सत्य से विमुख हाते हो सबसे तुमको सूचित करके जता देगा।

अल्लाह तआला ने जहां इस संसार में परीक्षा के लिये भेजा और शैतान को कियामत तक के लिए छूट दी वहीं मनुष्य को शैतान से बचने का उपाय स्पष्ट रूप से समझा दिये। कहीं बताया कि! जब तुमको शैतान कोंचा लगाए अर्थात बहकाने का प्रयास करे तो तुम अल्लाह से शरण मांगो वह बड़ा सुनने वाला बड़ा जानने वाला है। (सूरतुल आराफ़:200)

और बताया कि निःसंदेह जो लोग अल्लाह से डरते हैं उसका ध्यान रखते हैं जब उनको शैतान बहकाने का प्रयास करता है तो वह अपने रब को याद कर लेते हैं। पस वह सचेत हो जाते हैं। परन्तु जो लोग संयमी नहीं होते शैतान को अपना भाई बनाये होते हैं। शैतान अपने उन पथभ्रष्ठ भाइयों को पथभ्रष्टा में घसीटता रहता है और कोई कोताही नहीं करता। (देखिए सुरतुल आराफ आयत नं0 201–202)

पवित्र कुर्आन में इस बयान से ज्ञात हुआ कि जो व्यक्ति अल्लाह से डर कर संयमी जीवन विताएगा वह इस संसार में शैतान के बहकावे से बचा रहेगा और परीक्षा में सफल हो कर अल्लाह को राज़ी कर लेगा। सूरतुन्नहल आयत : 98–100 में बताया गया कि जब कुर्आन का पाठ करो तो अऊ़ज़ु बिल्लाहि मिनश्शैता–निर्रजीम पढ़ लिया करो अर्थात शैतान के बहकावे से अल्लाह की शरण मांग लिया करो इससे निःसंदेह शैतान का ईमान वालों और अल्लाह पर भरोसा करने वालों पर वश नहीं चलता, उसका वश तो उन लोगों पर चलता है जो उससे मित्रता करते हैं और अल्लाह का साझी ठहराते हैं।

इस कथन से ज्ञात हुआ कि शैतान के चरकों से और उसकी बुराईयों से बचने के लिए ईमान पक्का हो और अल्लाह पर भरोसा हो।

अल्लाह तआला हम

सबको इस परीक्षास्थल में संयमी जीवन बिताने का सामर्थ दे और शैतान से सुरक्षा प्रदान करे। और अपना और अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का सच्चा प्रेम प्रदान करे, आमीन।

❖❖❖

आदर्श न्याय.....

क़ाज़ी ने लोगों को हुक्म दिया कि आप लोग थोड़ा सा इंतजार करें, मुझे प्यास लगी है, मैं पहले पानी पी लूं, फिर फैसला करूंगा, फिर क़ाज़ी ने अपने खादिम को पानी का प्याला लाने का हुक्म दिया, नौकर ने आदेश पर अमल किया और एक बड़े ही खूबसूरत और उम्दा शीशे के प्याले में पानी हाजिर कर दिया, क़ाज़ी ने प्याला उठाया और पानी पीने लगा–

अचानक काज़ी ने शीशे का प्याला हाथ से छोड़ दिया, प्याला ज़मीन पर गिरते ही चकना चूर हो गया, प्याला टूटने से एक छनाका सा हुआ जिससे लोग घबरा गये कि अचानक यह क्या हो गया? अभी लोग आंखें फाड़े यह मंजर देख ही रहे थे कि काज़ी ने उन दोनों आदमियों में से एक का गिरेबान पकड़ कर ज़ोर से झिंझोड़ा और जोर से पुकारः तू ही चोर है! तू ही चोर है!

उधर वह बार बार इंकार कर रहा था कि जनाब नहीं, मैंने चोरी नहीं की है, मगर क़ाज़ी था कि उसका गिरेबान पकड़ कर ज़ोर ज़ोर से झिंझोड़ रहा था कि तुमने ही चोरी की है, थोड़ी सी कोशिश के बाद उस आदमी ने अपने जुर्म का इकरार कर लिया कि वाक़ई मैंने ही चोरी की है अब लोग और वह स्वयं भी काज़ी से पूछने लगे कि आपने चोर तो पकड़ लिया, लेकिन हमें भी बतायें कि आपको मालूम कैसे हुआ, जब कि आपके पास कोई सुबूत तो था नहीं?

क़ाज़ी ने कहा कि अस्ल में मुझे प्यास नहीं थी, मैं जानता हूं कि चोरों के दिल बहुत मज़बूत होते हैं– मैंने पानी का प्याला जानबूझ कर मंगवाया मैं तुम दोनों के चेहरों की ओर गौर से देख रहा था जब मैंने प्याला गिराया तो उसके किर्ची किर्ची होने की आवाज़ आई– उस आवाज़ से तेरे साथी समेत सब लोग परेशान हुए और सन्नाटे में आ गये, कि यह क्या हो गया! मगर तेरी हालत उसके बिल्कुल विपरीत थी, तेरे चेहरे पर किसी खौफ या परेशानी के आसार नहीं थे, चोर डाकू बड़े बड़े हादसात से नहीं घबराते, तो एक प्याला टूटने से उन पर घटराहट कैसे तारी हो जाये, मगर एक आम शहरी ज़रा से वाकिये से खासा मुतअस्सिर होता है, चुनांचे तेरा दूसरा साथी प्याला टूटने के छनाके से लरज़ उठा, इससे मैंने पहचान लिया कि तू ही मुख्य मुजरिम है और अब सज़ा तरे मुकद्दर में है।

❖❖❖

पहले अपने घर की इस्लाह की फिक्र करें

—मौलाना सय्यिद मुहम्मद हमजा हसनी नदवी

इस वक्त हमारे मुस्लिम मुआशरे (समाज) को जो चीज घुन की तरह खाये डाल रही है, वह है आपसी इन्तिशार (अव्यवस्था) और निजी फायदे को हर मिल्ली मफ़ाद और दीनी मुआमला पर तरजीह देना, उसका नतीजा यह है कि कोई भी मुआमला चाहे खानदानी हैसियत रखता हो या पूरी मिल्लत से उसका तअल्लुक हो, उलझता ही जा रहा है, ईसार और कुर्बानी के अलफाज़ या डिक्शनरियों में मिलते हैं या सवानेह व सीरत की किताबों में।

हमारा हाल तो अब यह है कि मिल्लत के मफाद की बात तो जाने दीजिए, खानदानी मुआमलात में भी तो बदतरीन किस्म की खुदगर्जी और मफाद परस्ती के शिकार हैं, जिसका पहला नतीजा यह है कि भाई भाई में नफरत और दूरी पैदा हो गई है, शायद चन्द ही घराने ऐसे होंगे जहां जायदाद या कारोबार के झगडे न हों, जिधर देखिए मामूली मामूली बात पर एक दूसरे के खून के प्यासे हो रहे हैं, आपसी महब्बत जो इस्लाम की अता करदा एक बड़ी नेमत थी बिल्कुल मफ्कूद (लुप्त) हो गई है।

लेकिन हमारी ग़फ़लत व बेहिसी अब इस हद तक पहुंच चुकी है कि हम को इस खतरनाक सूरते हाल का एहसास तक नहीं होता, इलाज तो दूर की बात है।

हम सब लोगों का यह फर्ज है कि अपने अपने हल्क़े की फिक्र करें और उसको दुरुस्त करें, अगर घर दुरुस्त होगा तो महल्ला और पड़ोस उससे मुतअस्सिर (प्रभावित) होगा और इस्लाहे हाल की मुअत्तर (सुगन्धित) हवा पूरी फ़ज़ा को खुशगवार कर देगी।

❖❖❖

मुसलमानों के.....

तरह के लोग हैं, जिनको दौलत की बड़ी मिक्दार खरीद नहीं सकती, इनको अपने उसूल से हटा नहीं सकती, इनको जुल्म पर आमादा नहीं कर सकती, क्या इनके सामने और आलम है जो हमारी निगाहों से ओझल हैं? ज़हन पर चोट लगाने वाली बाज़ चीजें होती हैं जो बाज़ औक़ात आदमी की जिन्दगी और ख़्यालात में इनक़लाब पैदा कर देती हैं।

कठिन शब्दों के अर्थ-

गिर्द व पेश = आस पास, मानूस = परिचित, प्रिय, बेहिसी = अन्देखी, मुतालआ = अध्ययन, मज़म्मत = बुराई, तजस्सुस = टोह, खोज, अज़रुए दीन = दीन के नियमानुसार, खैर ख्वाह = शुभेच्छुक, अक़्ले सलीम = शुद्ध बुद्धि, हक़ाइक़ = सच्चाइयां, आइद = लागू, तआरुफ़ = परिचय।

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्न: जनाज़े की नमाज़ का क्या हुक्म है?

उत्तर: जनाज़े की नमाज़ फर्ज़े किफाया है अर्थात अगर कुछ मुसलमान पढ़ लेंगे तो दूसरे मुसलमानों की तरफ से भी फर्ज अदा हो जायेगा लेकिन अगर कोई न पढ़ेगा तो बस्ती के सारे मुसलमान गुनहगार होंगे।

जब कोई मुसलमान वफात पाये तो उसके घर वालों पर, उसके खानदान वालों पर, उसके रिश्तेदारों पर, उसके महल्ले, गांव और बस्ती के मुसलमानों पर फर्ज होता है कि उसको सुन्नत के मुताबिक गुस्ल दें, क़फ़न दें, जनाज़े की नमाज़ पढ़ें और दफ़्न करें, अगर कुछ मुसलमान यह चारों काम कर देंगे तो सारे मुसलमानों की तरफ से यह फर्ज अदा हो जाएंगे लेकिन अगर यह काम कोई न करेगा तो बस्ती के सारे मुसलमान गुनहगार होंगे।

प्रश्न: मर्दों के क़फ़न में कितने और कौन कौन से कपड़े होते हैं?

उत्तर: मर्दों के क़फ़न में सुन्नत के मुताबिक तीन कपड़े हैं (1) चादर (लिफाफा) (2) इजार इसी को तहबन्द भी कहते हैं (3) कमीस अर्थात कुर्ता, इसको कफनी भी कहते हैं।

आम तौर से आदमी की लम्बाई 150 सेंटीमीटर से 170 सेंटीमीटर के बीच में होती है और चादर की लम्बाई आदमी की लम्बाई से दोनों ओर एक एक फुट निकली रहना चाहिए अतः चादर की लम्बाई 240 सेंटीमीटर होना चाहिए, इजार (तहबन्द) सर से पैर तक अर्थात 180 सेंटीमीटर हो, कमीस अर्थात कुर्ते का कपड़ा 240 सेंटीमीटर हो उसको बीच से मोड़ दिया जाये और मोड़ कर बीच में गला फाड़ दिया जाये इस प्रकार मर्द के क़फ़न में 6 मीटर 60 सेंटीमीटर कपड़ा चाहिए लेकिन अगर कपड़े की चौड़ाई कम है तो तहबन्द और चादर में पट्टी जोड़ने के लिए 2 मीटर 10 सेंटीमीटर कपड़ा और लेंगे और उसको बीच से फाड कर तहबन्द (इजार) और चादर की चौड़ाई में जोड़ देंगे अगर कपड़े की चौड़ाई इतनी है कि उस पर मुर्दे को लिटा कर दोनों तफर से ढ़का जा सके तो पट्टी जोड़ने की जरूरत नहीं।

प्रश्न: क्या इन कपड़ों के अलावा भी कुछ कपड़ों की जरूरत पड़ती है?

उत्तर: हाँ मुर्दे को नहलाते वक्त उसकी शर्मगाहों पर डालने के लिए एक मीटर कपड़ा चाहिए इसी प्रकार नहलाने के बाद बदन पोछने के लिए आधा मीटर कपड़ा चाहिए तथा गीला कपड़ा हटा कर 1 मीटर कपड़ा शर्मगाहों पर डाल कर मुर्दा

उठाने के लिए चाहिए आधा मीटर कपड़ा नहलाने के लिए दस्ताने बनाने के लिए चाहिए एक पट्टी दो उन्गल चौड़ी डेढ़ मीटर लम्बी और दो पट्टीयां एक एक फुट की चाहिए मुर्दा कब्रस्तान ले जाने के वक्त जनाजे के ऊपर डालने के लिए ढाई मीटर की चादर भी चाहिए, यह सारे कपड़े घर के पुराने साफ कपड़ों से भी बनाये जा सकते हैं वरना साढ़े पाँच मीटर कपड़ा और लेना पड़ेगा लेकिन अगर कपड़े की चौड़ाई कम है तो चादर में जोड़ने के लिए सवा मीटर कपड़ा और लेना पड़ेगा इस प्रकार अगर कपड़े की चौड़ाई पूरी हो तो अस्ल कफ़न के लिए 6 मीटर 60 सेंटीमीटर और दूसरे ज़ाइद कामों के लिए 5 मीटर 50 सेंटीमीटर कुल 12 मीटर 10 सेंटीमीटर कपड़ा चाहिए, बेहतर है कि 12 मीटर 50 सेंटीमीटर कपड़ा लें लेकिन अगर पट्टी जोड़ना पड़े तो 16 मीटर कपड़ा लें। यह हिसाब अंदाजे से लिखा गया है इसमें इन्शाअल्लाह कम नहीं पड़ेगा बढ़ जायेगा।

प्रश्न: औरतों के कफ़न में कितने कपड़े होते हैं? क्या औरतों के लिए पैजामा भी सिला जाता है?

उत्तर: औरतों के कफ़न में पाँच कपड़े होते हैं तीन वही जो मर्दों के लिए बयान हुए (4) सरबन्द (ओढ़नी) (5) सीना बन्द, सर बन्द 1 मीटर का हो और सीना बन्द 1 मीटर का हो अगर चौड़ाई कम हो तो आधा मीटर और ले कर पट्टी जोड़े इस तरह औरत के कफ़न के लिए अगर कपड़े की चौड़ाई पूरी है तो 14 मीटर 50 सेंटीमीटर और अगर पट्टी जोड़ना पड़े तो 18 मीटर कपड़ा लें।

नोट: इमाम के लिए जाये नमाज की कोई जरूरत नहीं इमाम पाक जमीन पर खड़े हो कर नमाज पढ़ाए। सिला पाइजामा न औरत के कफ़न के होते हैं न मर्द के कफ़न में।

कफ़न के अलावा जो ज़ायद कपड़े हैं उनको बाद में अपने काम में भी ला सकते हैं और जो भी कोई दूसरा ले उसको दे भी सकते हैं।

बाज़ जगह ज़ात का फक़ीर लेता है यह रस्म तोड़ना चाहिए इस्लाम में कोई शख्स अपने को फ़क़ीर समझ कर अपने को जलील न करे, वैसे उसको ज़रूरत हो तो यह कपड़े ले सकता है हम को चाहिए कि हम किसी मुसलमान को फ़क़ीर (मंगता) समझ कर उसको जलील करने का गुनाह अपने सर न लें।

प्रश्न: मुर्दे को नहलाने का तरीक़ा बताइये।

उत्तर: पहली ज़रूरी बात यह है कि मुर्दे को नहलाने के वक़्त लोग घेर कर न खड़े हों उसका जिस्म नहलाने वाले ही देखें, मुर्दा औरत हो और आंगन वग़ैरह में नहलाना हो तो ऊपर से चादर तान कर पर्दा भी करें।

मय्यित को जिस तख़्ते पर नहलाना हो उसे पाक करके, नहलाने की जगह से पानी निकलने का या किसी गड्ढे में पानी जमा करने का इन्तिज़ाम कर लीजिए ताकि उस पानी से नहलाने वालों या दूसरों को तकलीफ़ न हो, तख़्ता सरहाने की तरफ

ज़रा ऊँचा रखें, मुर्दे को तख़्ते पर लिटा कर ढोंढ़ी से घुटनों तक पाक कपड़ा डाल कर पहने हुए कपड़े आहिस्ता से उतार लीजिए, फिर बायें हाथ में दस्ताना पहन कर पहले ताक ढेलों से फिर पानी से अच्छी तरह इस्तिंजा कराइये फिर दस्ताना पाक करके या बदल के वुज़ू कराइये, वुज़ू में पहले मुंह धुलाइये, फिर कुहनियों समेत हाथ, फिर सर का मसह, फिर दोनों पैर धोइये, कुल्ली न कराइये न नाक में पानी पहुंचाइये, अलबत्ता अगर गुस्ल की हाजत रही हो तो यह भी कीजिए वरनः पाक रूई से दांत और नाक साफ़ करके मुंह और नाक रूई से बंद कर दीजिए ताकि अन्दर पानी न जाए, फिर सर और दाढ़ी नीम गर्म पानी से या साबुन लगा कर नीम गर्म पानी से साफ़ कीजिए, फिर बाईं करवट लिटा कर सादा हल्का गर्म पानी सर से पैर तक ठीक से बहाइये, अब आप कोई अच्छा साबुन लगा कर या बिन साबुन लगाए आहिस्ता आहिस्ता मल कर मैल निकाल कर धो दीजिए, फिर दाहिनी करवट लिटा कर बेरी की पत्ती पड़ा हल्का गर्म पानी सर से पैर तक ठीक से बहाइये यह दो गुस्ल हो गये अब सर की तरफ़ से लाश को ज़रा उठा कर आहिस्ता आहिस्ता पेट मलये और अगर कुछ निकले तो चीथड़े या ढ़ेले से पोंछ कर बायें हाथ में दस्ताना पहन कर ठीक से धो दीजिए। कुछ गंदगी निकलने पर वुज़ू और पहले वाले गुस्ल दुहराने की ज़रूरत नहीं, ऐसा न करने पर कभी कफ़न नापाक हो जाता है, इसलिए एहतियातन यह अमल करना चाहिए। अब मैय्यित को बायें करवट लिटा कर काफ़ूर पड़ा गुनगुना पानी सर से पैर तक ठीक से बहाइये मुर्दे का गुस्ल पूरा हो गया। अगर सफ़ाई न हो सकी हो तो दो गुस्ल और दें।

अगर गर्म पानी, बेरी की पत्ती और काफ़ूर वगैरह का किसी मजबूरी से इन्तिज़ाम न हो सके तो सादे पानी से इसी तरह गुस्ल दीजिए और अगर कोई मजबूरी हो तो मुर्दे को सिर्फ एक बार गुस्ल दे देने से गुस्ल हो जायेगा। औरत का गुस्ल भी इसी तरह होगा।

गुस्ल पूरा हो जाने के बाद कोई पाक कपड़ा नाफ़ से घुटनों तक डाल कर गीला कपड़ा अलग कर लीजिए और पाक कपड़े से बदन पोंछ कर कफ़न पहनाइये।

प्रश्नः मुर्दे को कफ़न पहनाने का तरीक़ा बताइये?

उत्तरः कफ़न बिछाना–

कफ़न को पहले ताक़ बार लोबान या अगरबत्ती वगैरह से धूनी दे लें फिर पाक चारपाई या जिस पर जनाजा ले जाना हो नहलाने की जगह के करीब रख कर कफ़न इस तरह बिछायें–

पहले बीच वाली पट्टी बिछायें, फिर लिफ़ाफा, फिर तहबन्द फिर कुर्ता इस तरह बिछायें कि नीचे वाला हिस्सा बिछा रहे और ऊपर वाला हिस्सा समेट कर सर की तरफ रख दें औरत के कफ़न में लिफ़ाफ़े पर

तहबन्द से पहले सीना बन्द इस तरह बिछायें कि बग़ल के नीचे से रानों तक रहे, सीना बन्द पर तहबन्द उसके ऊपर कुर्ता जैस बताया गया बिछा दें।

कफ़नाना-

मय्यित को कफ़न पर लिटा कर कुरते का ऊपर वाला हिस्सा सर से निकाल कर जिस्म पर उढ़ा दीजिए, और जो कपड़ा, गीला हटाने और परदे के लिए डाला था उसे निकाल दीजिए अब पेशानी हथेलियों और घुटनों और पैरों पर काफ़ूर मलये, अब जिसको मय्यित की ज़ियारत करना है ज़ियारत कर ले। फिर तहबन्द पहले बाई तरफ़ से पलटये, फिर दाई तरफ़ से इसी तरह चादर पहले बाई तरफ़ से फिर दाहिनी तरफ़ से पलटये।

औरत को कफ़नाने में काफ़ूर लगाकर उसके बालों के दो हिस्से करके आधे दाहिनी तरफ़ और आधे बाई तरफ सीने पर कुरते के ऊपर रख दीजिए और दोपट्टा सर से उढ़ा कर आंचल दोनों तरफ़ बालों पर डाल दीजिए अब लोगों को ज़ियारत का मौक़ा दीजिए, नामहरम के लिए औरत मय्यित की ज़ियारत हराम है। और अब पहले की तरह यानी पहले बाई तरफ से फिर दाहिनी तरफ़ से तहबन्द फिर सीना बन्द और आखिर में लिफ़ाफा पलट दीजिए, अब बीच की पट्टी बांध दीजिए।

मर्द के कफ़न में यही तीन कपड़े और औरत के कफन में यही पांच कपड़े देने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तअलीमात से साबित हैं और फ़िक्ह की किताबों में लिखे हैं, अगर हम को हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बात को सब से ऊपर रखना है तो हम अपनी तरफ़ से इससे ज़ियादा कपड़े न दें। यानी साफ़ा या पैजामा वगैरह न दें।

प्रश्न: मुर्दे को क़ब्र में दफ़नाने का तरीक़ा बताइये?

उत्तर: जनाज़े को कब्र में किबले की तरफ से बिस्मिल्लाहि व अला मिल्लति रसूलिल्लाहि (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) कह कर उतारें मय्यित अगर औरत हो तो चादर तान कर परदा करलें, और औरत का जनाज़ा उसके महरम उतारें, महरम न हों तो कोई भी उतारे दूसरे गैर महरमों के मुक़ाबले में शौहर को उतारना चाहिए।

मय्यित को दाहिनी करवट लिटा कर किबला रुख कर दें। ज़रूरत हो तो शाने के बराबर पीठ की जानिब मिट्टी का ढेला रख दें, बन्द खोल दें अब लकड़ी या पटरे वगैरह रख कर मिट्टी डालें, काफ़ूर वगैरा खुशबू लगा चुके हैं अब क़ब्र में क्योड़ा डाल कर कीचड़ न करें कि यह साबित भी नहीं है। बाज़ जगह मिट्टी डालने से पहले पढ़े हुऐ ढेले रखे जाते हैं। हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह भी नहीं सिखाया।

मिट्टी डालते वक़्त पहली बार मिन्हा ख़लक़नाकुम दूसरी बार, व फीहानुऐ़दुकुम और

तीसरी बार, व मिन्हा नुख़रिजुकुम तारतन उख़रा, पढ़ें। क़ब्र ज़ियादा ऊँची न करें, बीच का हिस्सा उभरा रखें क़ब्र बराबर करके उस पर पानी छिड़क दें, बाज जगह क़ब्र दुरुस्त करने के बाद उस अज़ान कहते हैं। क़ब्र पर अज़ान कहना हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी उम्मत को नहीं सिखाया लिहाज़ा जिसको हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सच्ची महब्बत हो और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बात सब की बातों पर ऊँची रखना चाहता हो वह क़ब्र पर अज़ान न कहे किसी सहाबी रज़ि0 ने किसी की कब्र पर अज़ान नहीं कही।

सवाब पहुंचाना–

दफ़न के बाद क़ब्र पर थोड़ी देर तक ठहर कर कुछ पढ़ कर मय्यित को सवाब बख़्शें और मय्यित के लिए मग़फिरत की दुआ करें। फिर घर आ कर अल्लाह जब भी तौफ़ीक़ दे किसी रस्म की पाबन्दी के बग़ैर कुरआन शरीफ़ पढ़ कर या कलमा पढ़ कर या गरीबों को खिला पिला कर या खाना कपड़ा या नक़्द गरीबों को दे कर या कोई नेक काम, नफ़्ली इबादत करने के बाद हाथ उठा कर अल्लाह तआला से दुआ करें कि ऐ अल्लाह मेरे इस अमल को कबूल फरमा और इसका सवाब फुलां की रूह को बख़्श दे फिर दुरूद पढ़ कर हाथ मुंह पर फेर लें यही सवाब पहुंचाना है। और यही फातिहा है। वफ़ात पाने वाले को फाइदा पहुंचाने और उससे तअल्लुक़ बाक़ी रखने का शरीअ़त के मुताबिक यह बेहतरीन तरीक़ा है बुज़ुर्गों की फातिहा का भी यही तरीक़ा है। तीजा चालीसवां बर्सी में अ़जीज़ व अक़ारिब को दावत खिलाना साहब–ए–किराम से साबित नहीं। यह बिदआ़त हैं इनसे बचें मय्यित की मग़फिरत की दुआ खुद करें दूसरों से करवाएं लेकिन ईसाले सवाब के लिए दूसरों को मुकल्लफ़ न करें कोई खुद से कर दे तो अच्छी बात है।

प्रश्न: एक शख्स ने अपनी एक ज़मीन मदरसे के लिए वक्फ कर दी, उसमें मदरसा भी बन गया, वक्फ करने वाले अब उसमें यह शर्त लगा रहे हैं कि मदरसे के नाज़िम मेरे लड़के रहेंगे वरना मैं ज़मीन वापस ले लूँगा, सुवाल यह है कि क्या वक्फ करने के बाद कोई शर्त लगाना वाकिफ के लिए दुरुस्त है?

उत्तर: वक्फ करते वक़्त वाकिफ ने जो शर्तें लगाई हैं, उन्हीं शर्तों का एतिबार होगा, वक्फ़ के बाद कोई ऐसी शर्त लगाना जो पहले से न हो, जाइज़ नहीं है, वक्फ के बाद वाकिफ के लिए वक्फ की हुई ज़मीन वापस लेना भी जाइज़ नहीं।

(रद्दुलमुहतार 1:459)

प्रश्न: मुश्तरक (सम्मिलित) जाइदाद जो अभी तक्सीम नहीं हुई है, अगर कोई हिस्सेदार अपना हिस्सा बराये मस्जिद वक्फ कर दे तो क्या यह वक्फ दुरुस्त होगा? क्या वक्फ के लिए यह ज़रूरी है कि वक्फ की जाने वाली जाइदाद अलग और तक्सीम शुदा हो?

उत्तर: अगर जाइदाद तक्सीम

के लाइक हो अगरचे अभी मुश्तरक हो, अगर कोई अपने हिस्से से वक्फ करे तो वक़्फ दुरुस्त होगा, तक्सीम शुदा (विभाजित) होना जरूरी नहीं है।

(फतावा हिन्दिया 2:465)

प्रश्न: किराये का मकान मालिक ने मस्जिद के नाम वक्फ कर दिया तो यह वक्फ दुरुस्त हुआ या नहीं?

उत्तर: मालिक ने जब अपना मकान मस्जिद के नाम वक्फ कर दिया तो वह मस्जिद की मिल्क हो गया, और वक्फ दुरुस्त हो गया।

(रद्दलमुहतार 4:640)।

प्रश्न: एक शख्स ने अपनी खेती की तमाम ज़मीनें मदरसे के नाम वक्फ कर दीं, वरसा के लिए कुछ नहीं छोड़ा, उनके इन्तिक़ाल के बाद वरसा का दावा है कि यह ज़मीनें हम लोगों की हैं क्योंकि यह वक़्फ दुरुस्त नहीं हुआ है, क्यों कि तमाम जाइदादें वक्फ नहीं की जाती हैं, अस्ल हुक्म क्या है?

उत्तर: जाइदाद के मालिक ने जब तमाम जाइदादें वक्फ कर दी हैं तो यह वक्फ हो गई हैं, अब उनमें विरासत जारी नहीं होगी और न वारिसीन को एतिराज़ का हक हासिल है।

(फतावा हिन्दिया 2:352)

प्रश्न: एक शख्स ने अपनी कल्मी बाग़ मदरसा के नाम हिबा कर दिया (दे दिया) है, और उसका मुतवल्ली (प्रबन्धक) खुद है, उस बाग़ की लकड़ियां अपने काम में लाता है, बाग़ की कुछ आमदनी तो मदरसे को दे देता है, बकीया अपने काम में लाता है, क्या यह दुरुस्त है?

उत्तर: जब बाग़ को मदरसे के लिए वक्फ कर दिया तो अब उस बाग़ की आमदनी या उसकी लकड़ियां खुद इस्तिमाल करना दुरुस्त नहीं है चाहे खुद ही मुतवल्ली हो।

(रद्दुलमुहतार 4:452)

प्रश्न: अगर कोई वसीयत करे कि मेरे मरने के बाद मेरी तमाम जाइदादे मनकूला वक्फ समझी जाये तो क्या यह वक्फ दुरुस्त हो जायेगा?

उत्तर: यह वक्फ़ भी दुरुस्त है लेकिन यह वसीयत के हुक्म में है, यानी कुल माले मतरूका में से सिर्फ एक तिहाई माल वक्फ शुमार किया जायेगा, बकिया माल वारिसीन में तक्सीम होगा।

(मजमउल अन्हार 1:740)

प्रश्न: एक शख्स ने दिल में इरादा किया कि अपने मकान के करीब की ज़मीन में मदरसा काइम करूँगा, और यह ज़मीन उस पर वक्फ रहेगी, बाद में गौर करने से इरादा बदल गया कि यह ज़मीन औलाद की रहाइश के लिए बेहतर रहेगी, वक्फ करना मुनासिब नहीं, सुवाल यह है कि वक्फ का इरादा करने से वह ज़मीन वक्फ हो गई, क्या उसको बदल सकते हैं या नहीं?

उत्तर: महज इरादे से ज़मीन वक्फ नहीं होती बल्कि जबान से कहने या वक्फ के लिए अलग कर देने से वक्फ होगी, मौजूदा सूरत में अभी ज़मीन वक्फ नहीं हुई है, इसलिए बदल सकते हैं।

(दुर्रे मुख्तार 4:343)

❖❖❖

सुलतान नासिरुद्दीन

—इदारा

दिल्ली के बादशाहों में सुलतान नासिरुद्दीन बड़ा नेक और शीलवान, वीर, ईश्वर भक्त और बड़ा दानी था, उसका दरबार और राजपाट बहुत शानदार था, लेकिन अपने रहने का खास महल बिल्कुल सादा था, बादशाहों की तरह उसकी हरम सरा बेगमात और कनीज़ों (दासियों) की छावनी न थी, केवल एक बेगम थी वही बेचारी घर का सब काम काज करती खाना भी अपने से पकाती।

एक रोज़ उस नेक बख़्त बीबी ने सुलतान से दरख़्वास्त की कि "एक लौण्डी बावर्ची खाने का काम करने को खरीद लीजिऐ तो बेहतर हो, रोटियाँ पकाने से मेरे हाथ झुलसते हैं।" सुलतान ने जवाब दिया कि "शाही ख़ज़ाना रिआया का माल है, मेरा हक़ उसमें कुछ नहीं कि रूपया लेकर लौंडी खरीदूँ, मेरा ज़ाती ख़र्च कुरआन शरीफ की किताबत (लिखाई) से चलता है। इसमें सिर्फ खाने पहनने का गुज़ारा हो सकता है। ऐ बेगम सब्र के साथ इस मशक़्क़त को बरदाश्त कर, उम्मीद है कि ख़ुदा आख़िरत में इसका अज्र देगा।

तमाम उम्र उस बादशाह की ज़िन्दगी फ़क़ीराना बसर हुई, हमेशा इबादते इलाही और परहेज़गारी में मशगूल (व्यस्त) रहा, अपने खर्च के लिए शाही ख़ज़ानों से कभी एक पैसा न लिया, सिर्फ कुरआन मजीद की किताबत पर ज़िन्दगी बसर की एक बार किसी अमीर ने इस ख़्याल से कि बादशाह के हाथ का लिखा हुआ कुरआन है, सामान्य से अधिक दाम दिये, यह बात सुलतान को नापसन्द हुई, इसलिए आइन्दा से ख़ुफ़या तौर पर हद्या करने का एहतिमाम किया।

उसी बादशाह के ज़माने में हलाकू खाँ का एलची (दूत) आया था, उसके स्वागत को बादशाह का मंत्री बलबन बड़ी शान व शौकत के साथ निकला, जिसके साथ चलने वाले पचास हज़ार सवार दो लाख पैदल और दो हज़ार जंगी हाथी थे उस समय तबल व नक़्क़ारे की ध्वनि नफ़ीरियों का शोर, हाथियों का चिंगाढ़ना घोड़ों का हिनहिनाना, हथियारों का चमकना, आतिशबाज़ी का छूटना, ऐसा अजीब हंगामा था जिसने मुग़ल राजदूत के दिल पर बड़ा असर किया जब उसको सम्राट के दरबार में अवसर मिला तो बारगाह की आराइश और उसमें आलीजाह शाहज़ादों की शान अमीरों और भारत वर्ष के राजा महाराजों का हुजूम देख कर और भी दंग रह गया।

❖❖❖

नजरान के ईसाई बादशाह उसक़फ़ की ओर से

रसूलुल्लाह सल्ल० की खिदमत में एक प्रतिनिधि मण्डल का आना और रसूलुल्लाह सल्ल०के द्वारा उन्हें ''मुबाहले'' का निमंत्रण देना

—इं0 जावेद इक़बाल

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना आने के 6 साल बाद अरब के विभिन्न क़बीलों के सरदारों को इस्लाम की ओर बुलाने के मक़सद से सिफ़ारती (संवादकीय) पत्र लिखवाने शुरु किए। जिनमें मुख्यतः तीन बातें होती थीं।

(1) एक खुदा की बड़ाई, उसकी इबादत करने का आह्वान।

(2) स्वयं मुहम्मद सल्ल0 के लिए अल्लाह का रसूल होने की घोषणा।

(3) शिर्क को छोड़ कर एक अकेले खुदा का फरमाबर्दार बनने का निमंत्रण।

इसी तरह का एक पत्र रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नजरान के बादशाह उसक़फ़ को भी लिखवाया, जिसका अनुवाद यह है—

"इस पत्र को मैं शुरु करता हूं हज़रत इब्राहीम, हज़रत इस्हाक़ और हज़रत याकूब के खुदा के नाम से, यह ख़त मुहम्मद की ओर से है जो खुदा का नबी और रसूल है और (यह पत्र) नजरान के सरदारों और नजरान के लोगों की ओर (भेजा जा रहा है)।

अल्लाह की तारीफ़ और महिमा मैं तुम्हारे सामने बयान करता हूं जो हज़रत इब्राहीम, हज़रत इस्हाक़ और हज़रत याकूब का माबूद है, फिर मैं तुम्हें निमंत्रण देता हूं कि बन्दों की इबादत को छोड़ कर खुदा की इबादत की ओर आ जाओ, यदि तुम इसे न मानो तो जिज़या दो और पराधीनता स्वीकार करो अगर यह भी न मानो तो जंग का ऐलान है।"

वस्सलाम

यह पत्र पढ़ कर उसक़फ़ के शरीर में कपकपी दौड़ गई। उसने तुरन्त अपनी काबीना की मीटिंग बुलाई। सबसे पहले उसने अपने प्रमुख सलाहकार/वज़ीर शिरजील को पत्र पढ़ने को दिया। शिरजील हमदान क़बीले का सरदार था। बादशाह समेत पूरे राज्य में उसकी सलाह के बगैर कोई काम नहीं होता था। बादशाह उसक़फ़ ने इस पत्र के बारे में शिरजील की राय जानना चाही तो शिरजील ने बड़ी गम्भीरता पूर्वक जवाब दिया कि हुजूर आप तो जानते ही हैं कि खुदा ने हज़रत इब्राहीम को वचन दिया हुआ है कि वह हज़रत इस्माईल की नस्ल में भी नबी भेजेगा। संभव है कि यह वही नबी हों, मैं नबी के बारेमें अपनी कोई राय नहीं दे सकता, कोई अन्य दुन्या का मामला होता तो ज़रूर कुछ कहता।

अब उसक़फ़ ने दूसरे सरदार अब्दुल्लाह को पत्र दिया और उसकी राय मांगी, मगर उसने भी शिरजील जैसा ही जवाब दिया। तब उसक़फ़ ने तीसरे सलाहकार

जब्बार बिन क़ैस को पत्र पढ़ने को दिया और राय मांगी मगर जब्बार ने भी पहले दो की तरह का जवाब देकर अपनी असमर्थता व्यक्त कर दी।

तीनों मुशीरों की तरफ़ से निराशाजनक जवाब सुन कर बादशाह ने पूरे राज्य में उस समय की परम्परानुसार गिर्जा के घंटे बजवा कर और रात में आग जलवा कर जनसभा का ऐलान करवा दिया। चारों ओर से लोग दौड़ पड़े। जब सब लोग जमा हो गए जो कि सबके सब ईसाई थे तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पत्र सबको सुनाया गया और जनता की राय ली गई। सलाह मश्विरे से यह तै पाया कि इन तीनों सलाहकारों को बादशाह के प्रतिनिधि के रूप में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास भेजा जाये। ये लोग वहां जायें और हालात का जायज़ा ले कर आयें। चुनांचे शिरजील, अब्दुल्लाह और जब्बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास मदीना गए और कुछ दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ रहे। रसूलुल्लाह सल्ल0 की अनुमति से इन लोगों ने मस्जिदे नबवी में पूर्व की ओर मुंह करके अपने तरीक़े से नमाज़ें भी पढ़ीं।

इन लोगों ने रसूलुल्लाह सल्ल0 से हज़रत ईसा अलै0 के संबंध में अपने विचार व्यक्त करने को कहा तो आप सल्ल0 ने फरमाया कि मेरे पास इस का जवाब आज तो नहीं है, तुम लोग ठहरो, मेरा रब इस बारे में मुझे जो बताएगा वह मैं तुम्हें सुना दूंगा। वे लोग ठहर गए, दूसरे दिन फिर आप सल्ल0 के पास पहुंचे। इस बीच रसूलुल्लाह सल्ल0 पर अल्लाह तआला की ओर से सूरः आलेइमरान की आयतें आ चुकी थीं लिहाज़ा आप सल्ल0 ने आयत नं0 59,60 और 61 पढ़ कर उन्हें सुना दीं, जिनका भावार्थ यह है— *"ईसा की मिसाल खुदा के निकट आदम की सी है जिसे मिट्टी से बना कर कहा कि (ज़िन्दा इंसान) हो जा, सो वह हो गया। तेरे रब की ओर से सच्ची बात यही है, सावधान शक करने वालों में से न होना। इस ज्ञान के आ जाने के बाद भी यदि कोई व्यक्ति इस बारे में हठधर्मी करे तो आप उससे कहें कि हम अपने बेटों को बुलाते हैं तुम अपने बेटों को बुला लो, हम अपनी औरतों को बुलायें तुम अपनी औरतों को बुला लो और स्वयं हम तुम भी एकत्र हो जायें फ़िर हम सब मिल कर खुदा से फ़रियाद करें और झूठों पर खुदा की लानत (फटकार) डालें।"*

यह आयतें सुन कर भी वे लोग न माने और अपनी बात पर अड़े रहे कि ईसा ख़ुदा के बेटे हैं, वह स्वयं खुदा के दर्जे पर हैं और तीन में के तीसरे हैं। उस दिन की मीटिंग यहीं पर समापत हो गई। अगले दिन प्रातः काल में हज़रत मुहम्मद सल्ल0 अपने साथ दोनों नवासों हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ि0 को चादर में लपेटे हुए लाए साथ में बेटी हज़रत फातिमा थीं उनके पीछे पीछे हज़रत अली रज़ि0 भी चले आ रहे थे। प्रतिनिधि मंडल के पास आ कर उपरोक्त आयत के अनुसार अल्लाह के सामने इकट्ठा हो कर दुआ करने का निमंत्रण दिया (इस तरह एकत्र हो कर दुआ करने को मुबाहला कहते हैं)।

वे लोग यह देख कर ठिठक गए। शिरजील अपने साथियों से कहने लगा, इनके बारे में कोई फैसला करना सरल नहीं है, यह तो बड़ा गम्भीर मामला है, यदि वह व्यक्ति सरदार है तो हमेशा के लिए हमारे सम्बंध इन लोगों से बिगड़ जायेंगे और हम इनकी निगाहों में खटकते रहेंगे। और यदि यह व्यक्ति अल्लाह का रसूल है तो हम पर कोई न कोई मुसीबत ज़रूर आयेगी, हमारा एक नाखून और एक बाल भी ज़मीन पर बाक़ी न बचेगा। लिहाज़ा तीनों ने मुबाहला न करने का फैसला किया। और रसूलुल्लाह सल्ल0 से कहा कि आप कल तक हमारे बारे में जो आदेश करेंगे हमें स्वीकार होगा, हमारी पूरी क़ौम हमारी बात मानती है, उन्हें भी कोई आपत्ति न होगी। चुनांचे दूसरे दिन रसूलुल्लाह सल्ल0 ने कुरआन की हिदायत के मुताबिक एक आदेश लिखित रूप में दिया जिसके अनुसार उन्हें अपने इलाक़े में हर प्रकार की आज़ादी दी गई थी तथा जिज़या के रूप में मात्र 2 हज़ार दिरहम वार्षिक देने की व्यवस्था थी एक हज़ार सफ़र के महीने में और एक हज़ार रजब के महीने में। यह आदेश लेकर वे तीनों अपने इलाक़े को लौट गए।

उधर बादशाह उसक़फ़ तथा अन्य अधिकारियों को इन लोगों की वापसी का बेचैनी से इंतज़ार था। सूचना मिलते ही वे लोग शहर के बाहर उनके स्वागत के लिए निकल पड़े। शिरजील ने रसूलुल्लाह सल्ल0 का फरमान उसक़फ़ को सौंप दिया। उसक़फ़ ने फ़रमान पढ़ा, पास ही खड़े उसके चचेरे भाई बशर ने भी पढ़ लिया। उसक़फ़ पढ़ कर बोला खुदा की क़सम यह तो अल्लाह के भेजे हुए नबी ही हैं। बशर ने यह सुनते ही अपनी ऊँटनी को मदीने की ओर दौड़ा दिया। उसक़फ़ उसे रोकता ही रह गया मगर वह कहता जा रहा था, अब तो मैं ऊँटनी से मुहम्मद सल्ल0 के पास जा कर ही उतरूंगा। बशर ने मदीना पहुंच कर इस्लाम कुबूल कर लिया और हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के पास रहने लगा, बाद में एक अवसर पर उसे शहादत नसीब हुई।

नजरान के पूरे इलाक़े में प्रतिनिधि मण्डल के आने और हज़रत मुहम्मद सल्ल0 से मुलाक़ात की तफ़सील फैल गई, हर जगह इसकी चर्चा थी। एक चर्च के ऊपरी भाग में एक पादरी वर्षों से खुदा की इबादत में व्यस्त था, उसके कानों तक भी यह चर्चा पहुंच गई, वह व्याकुल हो उठा, उसने अपने धार्मिक ग्रंथों में आख़िरी नबी के बारे में पढ़ रखा था, उसे उन का इंतजार था। वह चिल्लाने लगा मुझे शीघ्र नीचे उतारो नहीं तो मैं ऊपर से कूद पड़ूंगा, चाहे मेरी जान ही क्यों न चली जाये। नीचे आकर यह पादरी भी कुछ उपहार लेकर रसूलुल्लाह सल्ल0 की सेवा में उपस्थित होने के लिए चल दिया। मदीना पहुंच कर उसने भी इस्लाम कुबूल कर लिया। मदीना में रह कर सन्यासी ने इस्लाम की शिक्षा का अध्ययन किया और कुछ समय बाद अपने वतन लौट आया।

शेष पृष्ठ.....35.... पर

—पिछले अंक का शेष

उर्दू के आधार-स्तंभ

—डॉ0 मुहम्मद अहमद

11. 'आतिश' (1778–1849)

ख़्वाजा हैदर अली 'आतिश', ख़्वाजा अली बख़्श के पुत्र थे। उनका जन्म 1778 में फ़ैज़ाबाद में हुआ। आतिश के लड़कपन में ही पिता की मृत्यु के कारण उनकी शिक्षा की उपेक्षा हुई। उन्होंने नवाब मिर्ज़ा मुहम्मद तक़ी ख़ाँ की नौकरी कर ली। 1805 ई0 के लगभग जब नवाब स्थायी रूप से लखनऊ आ गये तो वे अपने साथ आतिश को भी ले आये। लखनऊ आने पर उन्हें 'इंशा' और 'मुसहफ़ी' के ज़ोरदार मारके दिखे जिनमें उन्हें बड़ा आनन्द आता था। यहीं से उनमें शायरी के प्रति रुचि जागृत हुई और वे शीघ्र ही 'मुसहफ़ी' के शागिर्द बन गये।

आतिश सभी प्रकार के दरबारी प्रभाव से मुक्त थे क्योंकि उन्होंने कभी किसी संरक्षण या कृपा की आकांक्षा नहीं की, उन्होंने फ़क़ीरों के समान जीवन व्यतीत करना अधिक पसन्द किया। आतिश की मृत्यु 71 वर्ष की उम्र में 1849 ई0 में हुई।

उर्दू ग़ज़ल के लेखकों में मीर तथा ग़ालिब के पश्चात 'आतिश' का ही स्थान आता है। उनकी ग़ज़लों के दो दीवान हैं, जिनमें से प्रथम को तो उन्होंने स्वयं ही तथा द्वितीय को उनकी मृत्यु के पश्चात उनके प्रिय शागिर्द ख़लील ने संगृहीत किया।

12. 'सुरूर' (1787–1867)

मिर्ज़ा रजब अली बेग 'सुरूर', मिर्ज़ा असग़र अली बेग के पुत्र थे, तथा 1787 ई0 में लखनऊ में पैदा हुए थे। वे एक प्रतिष्ठित परिवार के थे। उनकी शिक्षा—दीक्षा लखनऊ के साहित्यिक वातावरण में हुई थी। उन्होंने फ़ारसी और अरबी का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया था। वे एक उच्चकोटि के सुलेख (कातिब) थे। शायरी में वे आग़ा नवाजिश हुसैन के शागिर्द थे।

सुरूर का व्यक्तित्व आकर्षक था। वे हंसमुख प्रकृति के एक अच्छे आदमी थे। कहा जाता है कि नवाब ग़ाजीउद्दीन हैदर की निर्वासन आज्ञा के फलस्वरूप उन्हें कानपुर आकर रहना पड़ा, जाहां उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'फ़साना—ए—अजायब' की रचना की। 1846 ई0 में पचास रूपये मासिक वेतन पर नवाब वाजिद अली शाह के दरबारी कवि हो गये। इसके अगले वर्ष उन्होंने वाजिद अली शाह के आदेश से 'शमशेर ख़ानी' का अनुवाद 'सुरूरे सुलतानी' के नाम से किया। 'शररे इश्क़' उन अनेक छोटी कहानियों में से एक है जिनकी रचना उन्होंने 1847 तथा 1851 के मध्य की। 1856 में उन्होंने 'शगूफ़—ए—महब्बत की रचना की।

13. 'ज़ौक़' (1789–1854)

शैख़ इब्राहीम 'ज़ौक़ दिल्ली के एक निर्धन सिपाही शैख़ मुहम्मद रमज़ान

के बेटे थे। उनका जन्म 1789 में हुआ था। बचपन में उन्होंने हाफ़िज़ गुलाम रसूल से शिक्षा प्राप्त की थी। 'ज़ौक़' की शीघ्र ही शायरी में रुचि उत्पन्न हो गयी तथा वे अपने शेअर संशोधनार्थ अपने उस्ताद के सामने पेश करने लगे। वे बाद में शाह 'नसीर' से परामर्श लेने लगे। उनके अनेक विख्यात शागिर्द थे जिनमें सर्वाधिक महत्व के एवं उनकी प्रतिष्ठा वृद्धि करने वाले बहादुरशाह 'जफ़र' थे।

ज़ौक़ के भूतपूर्व उस्ताद 'नसीर' ने दक्षिण से लौट कर जब उन्हें उनके सम्मानित स्थान से अपदस्थ करने का प्रयत्न किया, तो उन्होंने अपनी काव्य प्रतिभा से सिद्ध कर दिया कि ऐसा करना सरल कार्य नहीं था। ज़ौक़ ने अकबर शाह द्वितीय से 'ख़ाक़ानिये हिन्द' की उपाधि अर्जित की। उन्होंने बहादुर शाह 'ज़फ़र' से जागीर तथा अन्य भेंटों के अतिरिक्त 'खान बहादुर' की उपाधि प्राप्त की। ज़ौक़ की मृत्यु 1854 ई0 में हुई।

14. 'ग़ालिब' (1797-1869)

मिर्ज़ा असदुल्लाह बेग ख़ां (उर्फ़ मिर्जा नौशा) जो पहले 'असद' और फिर 'ग़ालिब' तख़ल्लुस रखते थे, 1797 में आगरा में पैदा हुए। पालन-पोषण उनके ननिहाल, आगरा में हुआ। आरंभ में उन्होंने मौलवी मुहम्मद मुअज़्ज़म से शिक्षा प्राप्त की। परन्तु ग़ालिब के फ़ारसी के गंभीर ज्ञान का श्रेय मौलाना अब्दुस्समद हुरमुज़्द को है, जो दो वर्ष तक उनके विशेष शिक्षक थे। ग़ालिब ने उर्दू शायरी की रचना 8 या 9 वर्ष की अवस्था से ही शुरु कर दी थी, फ़ारसी शायरी की रचना के समय वे कठिनता से 10 या 11 वर्ष के रहे होंगे।

ग़ालिब अपनी प्रारंभिक अवस्था में शतरंज खेलने और पतंग उड़ाने के शौकीन थे। ये शौक़ उनकी साहित्यिक गतिविधियों में बाधक नहीं बने। 13 वर्ष की आयु में उनका विवाह दिल्ली के एक प्रतिष्ठित और ख्यातिप्राप्त घराने में हुआ। इस संबंध में उन्हें समाज की उच्च श्रेणी तथा साहित्य क्षेत्र में प्रवेश का अवसर मिला।

ग़ालिब के पत्रों के द्वारा उर्दू गद्य शैली को एक नवीन दिशा निर्देश मिला है, किन्तु कविरूप में उनकी प्रसिद्धि के कारण यह तथ्य उजागर नहीं हो सका। इस प्रकार वे एक प्रसिद्ध शायर ही नहीं थे अपितु अग्रगण्य गद्य लेखक भी थे। उनकी रचनाएं हैं-

(1) 'ऊदे हिन्दी', (2) 'उर्दू-ए-मुअल्ला', (3) फ़ारसी पद्य ता गद्य का कुल्लियात, (4) 'दीवाने-ए-उर्दू', (5) 'लतायफ़-ए-ग़ैबी', (6) 'तेग़-ए-तेज़', (7) 'क़ाता बुरहान', (8) 'पंज आहंग़', (9) 'नामाए-ग़ालिब', (10) 'मेहर-ए-नीमरोज़', (11) 'दस्तंबो', (12) 'सब्द चीन'।

15. 'मोमिन' (1800-1853)

दिल्ली के मोमिन ख़ां 'मोमिन' हकीमों के प्रसिद्ध घरानों से संबंधित थे। वे हकीम गुलाम नबी खां के पुत्र थे। मोमिन के पितामह हकीम नामदार खां, शाह आलम, शाही हकीम थे तथा नारनौल परगने में कुछ जागीर मिली हुई थी। अंग्रेजों के सत्ता ग्रहण करने

पर उनको पेंशन मिलने लगी, जिसका एक भाग मोमिन खां को भी मिलता था। मोमिन ने शाह अब्दुल क़ादिर से अरबी की शिक्षा प्राप्त की। तत्पश्चात अपने पिता व चचाओं से यूनानी चिकित्साशास्त्र की शिक्षा ग्रहण की तथा उन्हीं के मतब में चिकित्सा कार्य करने लगे। परन्तु यह कार्य केवल उनके मन बहलाव का साधन था। उनकी बुद्धि प्रखर तथा स्मृति तीव्र थी।

मिर्ज़ा ग़ालिब की भांति मोमिन भी प्राचीन व्यवस्था के अभिजात्य वर्ग से संबंधित थे तथा समय परिवर्तन के साथ संगति बैठाने में कठिनाई अनुभव कर रहे थे। उन्होंने दिल्ली कॉलेज में फ़ारसी के प्रोफेसर पद का प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया था। इसी प्रकार महाराजा कपूरथला का 350 रूपये प्रतिमास का प्रस्ताव इस आधार पर अस्वीकार कर दिया कि महाराज के दरबार का एक साधारण गवैया भी यही वेतन प्राप्त कर रहा था। एक अन्य अवसर पर, टोंक के नवाब वज़ीरुद्दौला ने उनके समक्ष टोंक में निवास करने का प्रस्ताव रखा परन्तु दिल्ली प्रेम के कारण उन्होंने उसे भी अस्वीकार कर दिया।

अन्य शायरों की भांति मोमिन ने कविता को अपनी जीविका साधन नहीं बनाया। यह उनका प्रिय व्यसन था जो क्रमिक विकास द्वारा उनके संवेदना में गहरा प्रवेश कर, उनके अस्तित्व का अनिवार्य अंग बन गया।"

मोमिन ने एक दीवान की रचना की जिसको उनके शिष्य शेफ़्ता ने संकलित किया तथा करीमुद्दीन ने 1746 में प्रकाशित किया। उन्होंने छह मसनवियां कुछ पहेलियां तथा अन्य रूपों में भी रचना की। सन 1852 में घर की छत से गिर जाने के कारण उनकी मृत्यु हो गयी।

16. 'ज़फ़र' (1675–1862)

मिर्ज़ा अबुल मुज़फ़्फ़र सिराजुद्दीन मुहम्मद बहादुर शाह, जिनका तख़ल्लुस 'ज़फ़र' था, अंतिम मुग़ल बादशाह थे। उनका जन्म 1775 ई0 में हुआ था। वे 1837 में सिंहासनासीन हुए। वे एक बादशाह की अपेक्षा शायर अधिक थे तथा इसी रूप में सप्रेम स्मरण किये जाते हैं। पहले वे ज़ौक़ के शागिर्द एवं मित्र थे, तदुपरांत ग़ालिब के हुए।

ज़फ़र केवल उर्दू के प्रतिभाशाली शायर ही नहीं थे, वरन् फ़ारसी के विद्वान और अद्भुत सुलेखक (कातिब) भी थे।

सन् 1858 में बहादुर शाह ज़फ़र को सिंहासन से उतार कर रंगून निर्वासित कर दिया गया जहां से वे एक दरवेश की भांति रहे तथा 1862 में उनकी मृत्यु हुई।

एक कवि के रूप में ज़फ़र की प्रसिद्धि 'मुख्यतः उनके ग़ज़लों के दीवान पर आधारित है जो अत्यधिक लोकप्रिय है। कुछ लोग ज़फ़र की अधिकांश ग़ज़लों का श्रेय उनके शायरी के उस्तादों ज़ौक़ तथा ग़ालिब को देते हैं। इस विचार में कुछ सच्चाई हो सकती है, परन्तु तथ्य यह है कि ज़फ़र स्वयं एक अच्छे शायर थे तथा उनकी अधिकांश ग़ज़लें उन्हीं के द्वारा रचित हैं।

शेष पृष्ठ.....39.... पर

हमारे स्मार्ट स्टूडेण्ट डेढ़ और ढ़ाई नहीं जानते!

—डॉ0 हैदर अली खाँ

बचपन से सूटबूट और टाई में स्कूल जाते हमारे स्मार्ट स्टूडेण्ट बिचारे डेढ़, ढ़ाइ, पौने तीन और सवा तीन नहीं जानते। उन्तालीस, उन्हत्तर और उन्सठ की बात छोड़िए, 'बयासी' तक नहीं जानते। यक़ीन न आए तो ख़ुद पूछ कर देख लीजिए।

मेरे पड़ोस के अंग्रेज़ी माध्यम का एक लड़का प्लस टू में 82 प्रतिशत अंक पाया था। मैंने उत्प्रेरित करने के लिए अपने परिवार की अंग्रेजी माध्यम की कक्षा 5 की दो छात्राओं को जोर देकर बताया तो वे बोल पड़ीं 'बयासी क्या होता है?' मैं अवाक रह गया। फिर प्रथम पैरा की सारी बातों को उनसे पूछा। वे पूर्णतः अज्ञानी सिद्ध हुईं। मैं हैरान व परेशान हूं कि हमारे बच्चे अपने घर–द्वार, समाज, व्यवहार व बाजार में प्रचलित शब्दों व तथ्यों से कितने दूर हैं? प्रश्न है कि यह खायीं कैसे पटेगी? जवाब है कि अभिभावकों को खुद ही 'धरती के सच' को स्वीकार करना पड़ेगा।

शिक्षा शास्त्रियों का एकमत है कि 'मातृभाषा' ही शिक्षा का बेहतरीन माध्यम है। बेहतरीन समझदारी पैदा करने के लिए मातृभाषा ही सक्षम है। मेरा यह कथन कदाचित् 'प्रलाप' ही कहा जायेगा क्योंकि स्वतंत्र भारत में 'अंग्रेजी' झोपड़ पट्टी में पहुंच गयी है और झोपड़ी निवासी भी अपनी संतान को 'साहब' बनाने के उपक्रम में लग गया है। बड़े नहीं सोचते तो बिचारा वह क्यों चेतने लगे? 18 अगस्त 2015 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय का एक दिलचस्प फैसला आया है कि जिसके अनुसार सरकार से वित्तीय लाभ पाने वाले लोगों को अपने बच्चों को बेसिक विद्यालयों में अनिवार्यता शिक्षा दिलानी चाहिए ताकि बेसिक शिक्षा में सुधार संभव हो सके। देखना है कि इस पर अमल हो भी पाता है या नहीं।

अपनी सोच और भावना को छात्रों और आप से साझा करने के लिए एक 'शेर' उद्धृत करना चाहता हूँ:—

तुम आस्मां की बुलंदी से जल्द लौट आना,।
हमें ज़मीं के मसायल पर बात करनी है।।

❖❖❖

नजरान के ईसाई .....

मामले की गम्भीरता को देखते हुए उसक़फ़ ने कुछ समय बाद एक दूसरा प्रतिनिधि मण्डल रसूलुल्लाह सल्ल0 के पास भेजा इस प्रतिनिधि मण्डल में बड़े गिरजा का बिशप, एक जज और एक गवर्नर के अलावा 24 बड़े अधिकारी तथा कई अन्य सरदार शामिल थे कुल मिला कर 60 सवारों का यह क़ाफ़ला मदीना पहुंचा और कई दिन साथ रहने के बाद एक नया फ़रमान ले कर वापस हुआ जिसमें चर्चों और पादरियों की स्वतंत्रता व अधिकारों के बारे में विस्तृत उल्लेख था। कुछ समय बाद उन सब ने इस्लाम कुबूल कर लिया।

❖❖❖

लाखों सलाम

—प्रस्तुति जमाल अहमद नदवी —हज़रत मौ0 शाह नफीसुल हुसैनी रह0

ताज दारे नुबुव्वत पे लाखों सलाम
शहर यारे नुबुव्वत पे लाखों सलाम
सय्यदुल अव्वलीं सय्यदुल आखरीं
इफ्तिखारे नुबुव्वत पे लाखों सलाम
फ़ख़रे औलादे आदम पे अरबों दुरूद
शाहनवाजे नुबुव्वत पे लाखों सलाम
वह जब आये जहां में बहार आ गई
नौ बहारे नुबुव्वत पे लाखों सलाम
जलवा गाहे मुहम्मद सल्ल0 गारे हिरा
जलवा ज़ारे नुबुव्वत पे लाखों सलाम
जिब्रईले अमीं, मरहबा मरहबा
राज़ दारे नुबुव्वत पे लाखों सलाम
नूर पाशे रिसालत पे दाइम दुरूद
नूर बारे नुबुव्वत पे लाखों सलाम
काबतुल्लाहि हिस्ने हसीने यतीम
सायादारे नुबुव्वत पे लाखों सलाम
वह जो फारान की चोटियों से उठा
शहसवारे नुबुव्वत पे लाखों सलाम
हर नबी की रिसालत हुई मोतबर
ऐतिबारे नुबुव्वत पे लाखों सलाम
जिसपे खत्मे नुबुव्वत का दारोमदार
उस मदारे नुबुव्वत पे लाखों सलाम

रुकशे हुस्ने यूसुफ है जिसका जमाल
उस निगारे नुबुव्वत पे लाखों सलाम
सिदरतुल मुन्तहा जिसकी गर्दे सफर
राहवारे नुबुव्वत पे लाखों सलाम
बद्र में तो नुज़ूले मलाइक हुआ
कारज़ारे नुबुव्वत पे लाखों सलाम
क्या कहूं जो उहद से महब्बत रही
कोहसारे नुबुव्वत पे लाखों सलाम
वह जो पाये मुबारक की ज़ीनत रहा
उस गुबारे नुबुव्वत पे लाखों सलाम
कोई देखे रिफ़ाक़त अबू बक्र की
यारगारे नुबुव्वत पे लाखों सलाम
अल्लाह अल्लाह! फारुक़ का दबदबा
ज़ी वक़ारे नुबुव्वत पे लाखों सलाम
बहरे उसमान रिज़वां की बैअत हुई
जाँ निसारे नुबुव्वत पे लाखों सलाम
मुर्तज़ा बाबे शह्रे उलूमे नबी
शाहकारे नुबुव्वत पे लाखों सलाम
जिस के दो फूल प्यारे हसन और हुसैन
शाखसारे नुबुव्वत पे लाखों सलाम
हर सहाबी नबी पर तसद्दुक़ रहा
जाँ सिपारे नुबुव्वत पे लाखों सलाम
सारी उम्मत पे हों अनगिनत रहमतें
पासदारे नुबुव्वत पे लाखों सलाम
जिसको तरसा किये चश्मो दिल ऐ नफीस
उस दियारे नुबुव्वत पे लाखों सलाम

उर्दू के कुछ विशेष शब्द प्रचलित हिन्दी में

—इदारा

हिन्दी भाषा, अवधी तथा व्रज भाषा लिए हुए है अतः उसके यहाँ "खात हैं", जात हैं, पियत हैं" बोलने में कोई दोष नहीं है, यही कारण है कि हिन्दी भाषियों ने अपने सरल स्वभाव से उर्दू के बहुत से विशेष शब्दों को अशुद्ध इम्ला से लिखने और अशुद्ध उच्चारण से बोलने में दोष न जाना, जब कि उर्दू भाषा में अशुद्ध इम्ला तथा अशुद्ध उच्चारण बड़ा दोष है अपितु अस्वीकार है, यदि कोई हज्जाजे किराम कहे, फ़िजा कहे, सिम्त कहे, ख़तम कहे तो तुरन्त टोका जाएगा कि हुज्जाजे किराम कहो फ़ज़ा कहो, सम्त कहो, ख़त्म कहो अतः मैंने इरादा किया कि प्रचलित हिन्दी में उर्दू के जो विशेष शब्द अशुद्ध इम्ला में लिखे जाते हैं उनमें से यहां कुछ को चिन्हित करूँ ताकि जो शुद्ध लिखना और बोलना चाहे वह इस ओर ध्यान दे।

यह ज्ञात रहे कि शब्दों को अशुद्ध लिखना या अशुद्ध बोलना न कोई पाप है न अपराध परन्तु उर्दू के विद्वानों को इससे कष्ट अवश्य पहुंचेगा।

ऐसे कुछ शब्दों की सूची प्रस्तुत है—

प्रचलित इम्ला	शुद्ध इम्ला	अर्थ	प्रचलित इम्ला	शुद्ध इम्ला	अर्थ
फ़रायज़	फ़रा:इज़	कर्तव्य	कुरान	कुर्आन	अल्लाह की किताब
ताला	तआ़ला	महान	वाकिया	वाक़िआ़	घटना
वाकियात	वाक़िआ़त	घटनाएं	फायदा	फ़ाइदा	लाभ
नताएज	नताइज	परिणाम	ताल्लुक	तअ़ल्लुक़	सम्बन्ध
ज्यादा	ज़ियादा	अधिक	इन्सानियत	इन्सानीयत	मानवता
कैफियत	कैफ़ीयत	दशा	आयद	आ़इद	लागू
तारुफ	तआ़रुफ़	पहचान	मुताला	मुतालआ़	अध्ययन
ख़्यालात	ख़यालात	कल्पनाएं	कायम	क़ाइम	अस्थापित
माशरा	मुआ़शरा	समाज	दुनिया	दुन्या	संसार

प्रचलित इम्ला	शुद्ध इम्ला	अर्थ	प्रचलित इम्ला	शुद्ध इम्ला	अर्थ
मोहम्मद	मुह्म्मद	अल्लाह के नबी का नाम	मुहब्बत	मह्ब्बत	प्रेम
वसात	वुसअ़त	फैलाव	मशाल	मशअ़ल	उल्का
सैयद	सय्यिद	श्रेष्ठ	मैयत	मय्यित	मृतक
तरजुमा	तरजमा	अनुवाद	गल्ती	ग़लती	त्रुटि
माशरत	मुआ़शरत	रहन सहन	माफ़	मुआ़फ़	क्षमा
माफ़ी	मुआ़फ़ी	क्षमादान	मामिलात	मुआ़मलात	विषय

यहाँ जो शब्द इस समय याद आये लिख दिये, हिन्दी में 'ऐन' साकिन (अ्) लिखना तो आसान है परन्तु पढ़ना कुछ कठिन है, इसलिए हम बअ्द (पश्चात) कअ्बा (ख़ुदा का घर) वअ्ज़ (उपदेश) को बाद, काबा, तथा वाज़ ही लिखते हैं।

उर्दू के आधार स्तम्भ.....

17. 'अख़्तर' (1827-1887)

लखनऊ के उन समस्त नवाबों में, जो स्वयं कवि थे, वाजिद अली शाह सर्वाधिक प्रबुद्ध थे। वे शायरी के प्रेमी थे तथा 'अख़्तर' नाम से रचनाएं करते थे। उन्होंने 20 वर्ष की आयु में सन् 1847 में सिंहासन-नारूढ़ हो कर केवल 1856 तक शासन किया, इस वर्ष अंग्रेजों ने उन्हें गद्दी से उतार कर कलकत्ता निर्वासित कर दिया।

वाजिद अली शाह, अमजद अली शाह (1842-47) जो कला और साहित्य के संरक्षक थे, के बड़े बेटे थे।

वाजिद अली शाह एक सिद्ध हस्त लेखक थे। उनकी कुछ अत्यधिक महत्वपूर्ण रचनाएं निम्नलिखित हैं-

(1) ग़ज़लों के छह दीवान- 'शुआ-ए-फ़ैज़', 'क़मर-ए-मज़मून', 'सुख़न-ए-अशरफ़', 'गुलदस्ता-ए-आशिक़ां', 'अख़्तर-ए-मुल्क' तथा 'नज़्म-ए-नामवर' शीर्षकों से संग्रहीत है। (2) अनेक मसनवियां जिनमें, 'हुज़्न-ए-अख़्तर', ख़िताबात-ए-महल्लात', 'बानी', नाज़ा', 'दुल्हन', दरफन-ए-मौसीक़ी, दरिया-ए-तअश्शुक़' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। (3) मरसियों के तीन संग्रह हैं (4) 'क़सायदुल- मुबारक' जिसमें उर्दू तथा फ़ारसी में क़सीदे हैं (5) 'मुबाहिसा बैनुल नफ़्सुलअक़्ल' (6) 'सहीफ़ा-ए-सुल्तानी' (7) 'नसाहए अख़्तरी' (8) 'इश्क़नामा' (9) 'रिसाला-ए-ईमान' (10) 'दफ़्तर-ए-परीशां (11) 'मक़्तले-मोतबर' (12) 'दस्तूर-ए-वाजिदी' (13) 'सौतुल-मुबारक' (14) 'हैबत-ए- हैदरी' (15) 'जौहर-ए-उरूज़' (16) 'इरशाद-ए-खाक़ानी आदि।

(क्रान्ति सितम्बर 2015 से ग्रहीत)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

उर्दू सीखिये

—इदारा

सामने लिखे हिन्दी की मदद से उर्दू जुम्ले पढ़िये।
शुद्ध उच्चारण के लिए जानकार से मदद लें।

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं।	اللہ کے سوا کوئی معبود نہیں
मुहम्मद सल्ल0 अल्लाह के रसूल हैं।	محمدؐ اللہ کے رسول ہیں
उन पर अल्लाह की रहमत हो।	ان پر اللہ کی رحمت ہو
उन पर अल्लाह का सलाम हो।	ان پر اللہ کا سلام ہو
रसूल नबी भी होते हैं।	رسول نبی بھی ہوتے ہیں
मुहम्मद सल्ल0 अल्लाह के आख़िरी रसूल हैं।	محمدؐ اللہ کے آخری رسول ہیں
मुहम्मद सल्ल0 अल्लाह के आख़िरी नबी हैं।	محمدؐ اللہ کے آخری نبی ہیں
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।	صلی اللہ علیہ وسلم
नबी के साथी को सहाबी कहते हैं।	نبی کے ساتھی کو صحابی کہتے ہیں
सहाबी की जमा सहाबा है।	صحابی کی جمع صحابہ ہے
सारे सहाबा जन्नती हैं।	سارے صحابہ جنّتی ہیں
अल्लाह सहाबा से राज़ी हुआ।	اللہ صحابہ سے راضی ہوا
सहाबा अल्लाह से राजी हुए।	صحابہ اللہ سے راضی ہوئے
हम प्यारे नबी सल्ल0 की उम्मत में हैं।	ہم پیارے نبیؐ کی امت میں ہیں
हम पाँचों वक्त की नमाज़ पढ़ते हैं।	ہم پانچوں وقت کی نماز پڑھتے ہیں
हम रमज़ान के रोज़े रखते हैं।	ہم رمضان کے روزے رکھتے ہیں
हम माल की ज़कात निकालते हैं।	ہم مال کی زکوٰۃ نکالتے ہیں
ज़कात गरीब भाइयों को देते हैं।	زکوٰۃ غریب بھائیوں کو دیتے ہیں
इस्तिताअ़त होने पर हम ह़ज करते हैं।	استطاعت ہونے پر ہم حج کرتے ہیں
हम मुसलमान हैं।	ہم مسلمان ہیں
हम अपने वतन के वफ़ादार हैं।	ہم اپنے وطن کے وفادار ہیں
सल्लल्लाहु अलन्नबिय्यि व सल्लम।	